स्तोत्र संग्रह


Swami Shri Ram ji


Swami Shri Vidhyadar Ji


Swami Shri Mahadev Kak Ji


Mahatma Dr. Suri Kanth Ji

प्रकाशक :

श्री स्वामी विद्याधर स्वामी महादेव शैवाश्रम

विवेक विहार पलौड़ा, जम्मू

विषय सूची



श्री गणेशाय नमः

आनन्दमानन्द करं प्रसन्नं ज्ञानस्वरूपं निजबोध युक्तं योगीन्द्रमीढयं भवरोग वैद्यं श्री सदगुरुं नित्यमहं नमामि श्रीमत्परं ब्रह्म गुरुं नमामि श्रीमत्परं ब्रह्म गुरुं भजामि श्रीमत्परं ब्रह्म गुरुं वदामि श्रीमत्परं ब्रह्म गुरुं श्रयामि।

मैं उस श्रेष्ट गुरुदेव जो परंब्रह्म के समान है, शिवस्वरूप है, को नित्य नमन करता हूँ। विनती करता हूँ। उसी का आश्रय लेता हूँ तथा जो अपार सुखों का सुख (समावेशात्म सुख) देता है। ज्ञान स्वरूप है, आत्म बोध से युक्त है, योगेन्द्रों से पूजा जाता है, संसारिक रोगों (दुखों) का वैद्य है अर्थात् परम शिव से मिलाने की व्यवस्था का उपाय करता है, मार्ग दिखाता है।

'दो शब्द'

सन्तों तथा गुरुओं के मुख से निकले शब्द भक्तों एवं शिष्यों के लिए आप्तवचन होते हैं। इन्हें वे अपनी पात्रता तथा श्रुतिबोध के अनुरूप ही गुरु-प्रसाद के रूप में शिरोधार्य करते हैं। श्रद्धा और भक्ति के आवेश में वे इन्हें उद्घाटित भी करते हैं। शिष्य-परम्परा में इस तरह संचरित होकर ये वचन विस्तार को प्राप्त होते हैं। ऐसे वचनों को संकलित कर प्रकाश में लाना सदा ही वाञ्छनीय और अपेक्षित रहा है।

इस पुस्तिका के माध्यम से कुछ ऐसी स्तुतियों तथा काशमीरी लीलाओं का प्रकाशन भी हुआ है जो न पारम्परिक हैं और न प्रचलित, अपितु "आश्रम" द्वारा संजो कर रखी हुई काव्यांजलि है जिसमें भक्तिभाव के उद्रेक का प्रस्फुटन मातृभाषा में हुआ है। ये लेखक एवं प्रकाशक के उदार दृष्टिकोण के परिचायक हैं, क्योंकि पुष्प-लता को गमले से निकाल कर उपवन में पल्लवित होने तथा सुगन्धि को सर्वत्र फैलने का अवसर दिया गया है। समस्त शिष्यवर्ग ऐसे अवदान से लाभान्वित होकर लेखक का सदा कृतज्ञ रहेगा।

- डॉ० जयकृष्ण शर्मा

जम्मू
कार्तिक अष्टमी, सं २०५७ वि०
२००० ई०

श्री विघ्नहर्त्रे नमः

प्राक्-कथन

शताब्दियों से कहा जाता है ''आत्मदीपो भव'' अर्थात् सामान्य से ऊपर उठकर वह कुछ प्राप्त कर लो जिससे आत्म ज्ञान मिले और कुछ परमार्थ भी हो जाए। परमार्थ जीवन का सबसे बड़ा मूल्य है। अपने लिए हर कोई जीता हैं जो समस्त जगत के जाने अनजाने आयामों को अपना ज्ञान दे सके वही महत्त्वपूर्ण हैं इस से अमरत्व की प्राप्ति होती है। ऐसे परमार्थी व्यक्ति जो रहे हैं वे अब शरीरी भले न हों परन्तु पहले से अधिक श्रद्धेय हैं और अपने हाथ में अमृत कलश लिए अनुग्रह द्वारा अपने होने का परिचय देते हैं।

भारत की आध्यात्मिकता की सबसे बड़ी उपलब्धि है योग, ध्यान, आत्मचिन्तन तथा आत्म दर्शन। इसे प्राप्त करने के लिए ही सारे शास्त्रों को लिखने का श्रम किया गया है। शैव (त्रिक) दर्शन काश्मीर घाटी की देन है। इस सिद्धान्त को पनपने का पूरा अवसर हमारे पूर्वजों, सन्तों, महात्माओं और शिवसायुज्य प्राप्त साधकों ने दिया है। अनुकूल परिस्थियों के अभाव के कारण संस्कृत भाषा का प्रयोग धीरे-धीरे घटता गया तथा गिने-चुने महानुभाव ही संस्कृत भाषोन्मुख रहे, जिन्हें काश्मीर शैव सिद्धान्त के शास्त्रों के अध्ययन का अवसर मिला। इस तरह वे आत्म लाभ प्राप्त करके परोपकार की ओर अग्रसर रहे। इन्हीं में अठारवीं शताब्दि (ई०) के श्री इश्वर स्वामी पाद, उनके भतीजे श्री राम स्वामीपाद का नाम उल्लेखनीय है। संवत् १८९४ ई० में फतहकदल श्रीनगर में श्री राम शैव (त्रिक) आश्रम स्थापित किया गया जो स्वामी श्री रामजी के अन्तर्ध्यान के पश्चात् क्रमशः स्वामी महताब काक, स्वामी गोविन्द कौल आदि कुशलता पूर्वक चलाते रहे।

श्री स्वामी रामजी की शिष्य श्रृंखला के ही सिद्ध पुरुष श्री स्वामी विद्याधर का आश्रम करण नगर, श्रीनगर में परोपकारार्थ १९३५ ई० में स्थापित किया गया। श्री स्वामी विद्याधर की प्रतिभा असाधारण थी। संस्कृत भाषा में कई स्तुतियाँ लिखकर स्वामीजी ने काश्मीर-शैव दर्शन के साहित्य में अपना योगदान दिया है। स्वामी जी का

व्यक्तित्व अलौकिक तथा परिपूर्ण था। इनकी तपस्या, वैराग्य, स्वतन्त्रता, अध्यात्मिक ज्ञान का वृतान्त "शिव सिद्धान्त रत्न - जीवन चरित्र" नामी पुस्तिका में दिया गया है जो श्री स्वामी विद्याधर शैव आश्रम, करण नगर, श्रीनगर से प्रकाशित हुई है।

स्वामी जी ने अपने जीवनकाल में ही अपने परम शिष्य श्री स्वामी महादेवकाक (रत्नीपोरा) क़ो विशेष दृष्टि पात द्वारा अपने स्वामित्व का पारम्परीय उत्तराधिकारी बनाया था। जिसकारण नौकरी से अवकाश प्राप्त कर इन्हों ने रत्नीपोरा में ही एक अलग आश्रम १९५२ ई० में स्थापित किया। यहां अनेकों भक्तजनों को पारमार्थिक लाभ प्राप्त होता रहा। स्वामी महादेवकाक सद्गुरु महाराज (जिन को भक्तजन आदर से भगवानजी कहा करते थे) का एक महान बहुस्तरीय व्यक्तित्व था। ब्रह्माचारी होते हुए भी घर गृहस्थ का कार्य सफलता से निभा कर उन्होंने अनुपम उपमा स्थापित की। फूल-उगाने के काम में उनकी अति उत्तम रूचि थी। पहनाव, खानपान में वह साधारण गृहस्थी की तरह रहते थे। भगवान जी अपने संलेषित शिष्यों का अपार प्रेम से अन्त तक पथ-पदर्शन करते रहे।

आप ऋषि थे, अपने तपोबल और साधना से उन्होंने अपने गुरु श्री विद्याधर की भान्ति महान दैवी शक्ति पाई थी। वह संत प्रकृति से अलंकृत थे। इन सब का दृष्टान्त उन कविताओं में मिलता है जो भगवान जी के मुखार्बिन्द से समय-समय पर निकले हैं। इस अमरवाणी का संकलन एक पुस्तिका के रूप में श्री महादेव शैवाश्रम रत्नीपोरा द्वारा प्रकाशित हुआ है।

स्वामी विद्याधर के निर्वाण के पश्चात् उनके प्रधान शिष्य महात्मा डा० सूर्यकण्ठ करण-नगर स्थापित आश्रम का कार्यभार सम्भालने के साथ-साथ पठन-पाठन का काम भी कराते रहे। चालीस साल तक शैव शास्त्रों का अध्ययन दिन प्रतिदिन कराना अपनी जगह. महत्व रखता हैं ऐसे शान्त स्वभाव वाले निष्काम कर्मयोगी तथा निपुण महात्मा आजकल के समय में मिलने दुर्लभ हैं। इन सब महात्माओं के आत्म लाभ तथा वाक्सिद्धियों के वृतान्त आजतक भक्तजन याद करते रहते हैं।

विस्थापन के पश्चात् यद्यपि घाटी से संबन्धित अनेक आश्रमों, मठों एवं देवस्थानों का निर्माण जम्मू तथा अन्य स्थानों पर हुआ है, लेकिन कई परिस्थियों के कारण श्री स्वामी विद्याधर तथा उनके परम शिष्य श्री स्वामी महादेवकाक रत्नीपोरा के आश्रमों के निर्माण में कुछ देरी हुई है अबकी बार "श्री स्वामी विद्याधर स्वामी महादेव शैवाश्रम" नामी आश्रम का पलोरा (जम्मू) में नव-निर्माण किया गया है। वे महानुभाव जिन्होंने इस के निर्माण में कायिक, वाचिक तथा आर्थिक सहायता दी है उनको स्वामी महाराज स्वस्थ, दीर्घ आयु तथा सुख समृद्धि प्रदान करे।

इस आश्रम की स्थापना के साथ-साथ हम अपने प्रियजनों तथा स्वामी जी के भक्तजनों को यह पुस्तिका उपहार के रूप में भेंट करते हैं जिसमें दोनो गुरुजनों की कुछ स्तुतियाँ रखी गई हैं। इन स्तुतियों का शब्दार्थ तथा भावार्थ भक्तजनों के सन्मुख रख रहे हैं। सर्वसाधारण भक्तजन, विशेषकर हमारे जिज्ञासु भगिनी-वर्ग के आग्रह एवं अनुरोध पर शब्दार्थ के साथ-साथ भावार्थ (विद्वता के प्रदर्शन के बिना ही) सरल भाषा में दिया गया है। हम ने भक्तिरस से पूर्ण कुछ लीलाएँ भी दी हैं जो इन दोनों आश्रमों की धरोहर रही हैं। आशा है कि भक्तिजन इन को पढ़कर मनन करेंगे तथा अपने दैनिक पूजा अचर्ना में इन्हें प्रयोग में लायेंगे। इन से पाठक को अभीष्ट की प्राप्ति, चरम कोटि की शान्ति मिलने में, संसारिक दुखों के निवारण में सहायता मिलेगी - ऐसा हमारा विश्वास है।

श्री अभिनव गुप्त आचार्य ने लघु-प्रक्रिया नामक स्तोत्र में कहा है :-

ऊनाधिकमविज्ञातं पौर्वापर्यविवर्ज़ितम् ।
यच्चावधानरहितं बुदेर्विस्खलितं च यत् ।।
तत्सँव मम सर्वेश भक्तस्यार्तस्य दुर्मतेः ।
क्षन्तव्यं कृपया शम्भो यतस्त्वं करूणापरः ।।
अनेन स्तोत्रयोगेन तवात्मानं निवेदये ।
पुनर्निष्कारणमहं दुखानां नैमि पात्रताम् ।।

हे सर्वेश्वर! पाप और पुण्य को न जानते हुए भूतकाल में क्या किया और भविष्य में क्या मिलेगा, इस पर ध्यान न देते हुए, जो भी कर्म मैंने, बुद्धि के भ्रष्ट होने से असवाधानता में किए हैं, मुझ मूर्ख और आर्त के उन सभी कार्यों पर आप क्षमा कीजिए क्योंकि आप करुणाकर हैं। अतः इस स्तोत्र के द्वारा मैं आपके सामने आत्म सर्मपण कर रहा हूँ। कहीं ऐसा ने हो कि मैं निष्कारण ही फिर से संसारिक दुखों का पात्र बनूँ।

सर्वातीतः शिवो ज्ञेयो यं विदित्वा विमुच्यते।

– विश्वनाथ जोत्शी (भट्ट)

श्री अभिनवगुप्तपादाचार्य कृत

भैरव स्तुतिः

(हिन्दी रूपान्तरकार : विश्वनाथ जोत्शी भट्ट)

व्याप्त चराचर भाव विशेषं
चिन्मयमेकमनन्तमनादिम् ।
भैरव नाथमनाथ शरण्यं
त्वन्मय चित्ततया हृदि वन्दे ।।१।।

शब्दार्थ

व्याप्त = फैला हुआ, चराचर = स्थावर तथा जङ्गम रूप, भाव = सता (entity), विशेषं = खास, चिन्मयम् = चैतन्य रूप, एकं = अद्वितीय, अनन्तम् = अनन्त, अनादिम् = आदि रहित, भैरव = भैरव रूप, नाथमनाथ = अनाथों के भी नाथ, शरण्यम् = शरण देने वाली, त्वन्मय = आप के स्वरूप को, चित्ततया = (अपने) चित्त के साथ मिलाकर, हृदिवन्दे = हृदय से नमस्कार करता हूँ।

भावार्थ

विशेष सत्ता को, जो स्थावर और जङ्गम रूप जगत में व्याप्त है, जो चैतन्यरूप है, अद्वितीय, अन्नत और आदिरहित है जो भैरव रूप है और अनाथों को शरण देने वाली है ऐसे आप के सत्ता रूपी स्वरूप को अपने स्वरूप के साथ एक करके हृदय से नमस्कार करता हूँ।

त्वन्मयमेतदशेषमिदानीं
भाति मम त्वदनुग्रह शक्तया ।
त्वं च महेश! सदैव ममात्मा
स्वात्ममयं मम तेन समस्तम् ।।२।।

शब्दार्थ

त्वन्मयम् = आप के स्वरूप को अपने चित्त के साथ मिलाकर, एतत् = यह, अशेषम् = सारा, इदानी = यह जगत, भाति = दिखाई देता है, मम = मेरे को, त्वद् = आपके, शक्तया = अनुग्रह शक्ति से, त्वं = आप, च = भी, ममात्मा = मेरी आत्मा, स्वात्ममयं = मेरा अपना ही स्वरूप, तेन = इस कारण, समस्तम् = सारा विश्व।

भावार्थ

आपके स्वरूप को अपने चित्त के साथ मिलाकर हे महेश! आप की अनुग्रह शक्ति से यह सारा जगत सदा अपनी ही आत्मा दिखाई देता है। इस कारण सारा विश्व मेरा अपना ही स्वरूप है।

स्वात्मनि विश्व गते त्वयि नाथे
तेन न संसृति भीति कथास्ति ।
सत्स्वपि दुर्धर दुःख विमोह–
त्रास विधायिषु कर्म गणेषु ।।३।।

शब्दार्थ

स्वात्मनि = अपना ही स्वरूप, विश्व = जगत के, गते = सम्बन्ध (related), त्वयि = आप को समझ कर, नाथे = हे नाथ!, तेन = इस कारण, न = नहीं, संसृति = संसारिक गति, भीति = भयानक, कथास्ति = कभी भी, सत्स्वपि = यर्थाथ में क्यों न, दुर् धर = बड़े कठिन, दुख = दुख, विमोह = मोह, त्रास = भय, विधायिषु = देने वाली, कर्मगणेषु = कर्मों के समूह भी हूँ।

भावार्थ

इस विश्व को आपका ही स्वरूप समझ कर, अपना ही स्वरूप होने के कारण मुझे हे नाथ! ज़रा भी (कभी भी) संसारिक गति का भय नहीं लगता अर्थात् जन्म-मरण की गति यर्थाथ में नहीं ड़राती; चाहे क्यों न बड़े कठिन दुख, मोह तथा कर्मों के समूह भय देने वाले भी हो।

अन्तक! मां प्रति मा दृशमेनां
क्रोध कराल तमां विदधीहि ।
शंकर सेवन चिन्तन धीरो
भीषण भैरव शक्ति मयोस्मि ।।४।।

शब्दार्थ

अन्तक = महाकाल, मां प्रति = मेरी तरफ, मा = मत, दृशम् = दृष्टि से, एनाम् = ऐसी, क्रोध = क्रोध भरी, करालतमां = भयंकर, विदधीहि = डाल, शंकर = कल्याणकारी शिव, सेवन = विमर्श से, चिन्तन = स्मरण से, धीरो = धैर्यवान, भीषण = भयंकर (terrific), भैरव = भैरव की, शक्तिमयो = शक्तिवाला, अस्मि = बन गया हूँ।

भावार्थ

हे महाकाल! मेरी तरफ ऐसी क्रोधभरी भयंकर दृष्टि मत डालो! मैं कल्याणकारी शिव के (निरन्तर) स्मरण तथा विर्मशण से धैर्यवान तथा भैरव की भयंकर शक्ति वाला बन गया हूँ।

इत्थमुपोढ भवन्मय संवि–
द्दीधिति दारित भूरित मिस्त्रः।
मृत्यु यमान्तक कर्म पिशाचै–
नाथ! नमोऽस्तु न जातु बिभेमि ।।५।।

शब्दार्थ

इत्थम् = इस तरह, उपोढ़ = संचय किया, भवन्मय = आप सम्बन्धी, संविद् = संविद् भगवती, दीधिति = किरणें, दारित = नष्ट हुआ= भूरित = बहुत, मिस्त्रः = अज्ञान रूपी अन्धकार, मृत्यु = मौत, यम = यम, अन्तक = काल, कर्म पिशाचै = कर्मों के पिशाच (devil spirit), नाथ! = हे नाथ!, नमः = नमस्कार, अस्तु = हो, न जातु = नहीं जानता हूँ, बिभेमि = डरना।

भावार्थ

इस प्रकार आप सम्बन्धी संविद् भगवती की (उद्धित) किरणों से मेरा अज्ञान रूपी बहुत सारा संचय किया हुआ अन्धकार नष्ट हुआ है। अतः मैं यम, काल इत्यादि कर्मों के पिशाच से ड़रना नहीं जानता हूँ। हे नाथ! आप को मेरा (बारम्बार) नमस्कार हो।

प्रोदित सत्य विबोध मरीचि
प्रोक्षित विश्व पदार्थ सतत्त्वः ।
भाव परामृत निर्भर पूर्णे
त्वय्यहमात्मनि निर्वृत्तिमेमि ।।६।।

शब्दार्थ

प्रोदित = उदय हुई, सत्य = यथार्थ, विबोध = ज्ञान, मरीचि = किरणें, प्रोक्षित = निर्मल चितरूप (beyond the range of sight), विश्वपदार्थ = समस्त पदार्थ समूह, सतत्त्व = तत्त्व दृष्टि से, भावपरा = परा (चित अमृत) भाव, निर्भर = परिपूर्ण, त्वय्यहम् = आप का ही, आत्मनि = अपना ही चितरूप, निवृत्तिमेमि = अनुभव करता हूँ।

भावार्थ

मुझ में सच्चे ज्ञान की किरणों का उदय हो गया है। जिससे तत्त्व दृष्टि से समस्त पदार्थ समूह निर्मल चित्त रूप हो गया है। परा चित्त अमृत भाव से परिपूर्ण आपका ही

परमार्थिक स्वरूप है जो मैं अपने ही चित्तस्वरूप में अनुभव करता हूँ। अतः आनन्द प्राप्त करता हूँ।

मानस गोचरमेति यदैव
क्लेश दशातनु ताप विधात्री ।
नाथ! तदैव ममत्वदभेद
स्तोत्र परामृत वृष्टि रुदेति ।।७।।

शब्दार्थ

मानस = मन से, गोचरम् = अनुभव करने की क्षमता, ऐति = इस प्रकार, यदैव = जब भी, क्लेश दशा = कष्ट की दशा, तनु = शरीर, ताप = सन्ताप, विधात्री = उत्पन्न करने वाली, नाथ! = हे नाथ, तदैव = उसी समय, मम = मेरे (अन्दर) त्वद् अभेद = आप से, अभेद दशा, स्तोत्र = स्तोत्र के रूप में, परामृत = परा अमृत, वृष्टि = वर्षा, उदेति = उदय होती है।

भावार्थ

जब भी बड़े सन्ताप देने वाली कष्ट की दशा इस प्रकार मन से अनुभव करके उत्पन्न होतीं है। उसी समय हे नाथ! मेरे अन्दर आप से अभेद दशा परामृत वर्षा रूपी स्तोत्र उद्धित होते हैं।

शंकर! सत्यमिदं व्रत दान
स्नान तपो भवताप विनाशि ।
तावक शास्त्र परामृत चिन्ता
सिन्धति चेतसि निर्वृति धारा ।।८।।

शब्दार्थ

शंकर! = हे शंकर, सत्यं = सच है, व्रत = व्रत, दान = दान, स्नान = स्नान, तपो = तप, भवताप = सांसारिक दुख, विनाशि = नाश करते हैं, तावक = आप सम्बन्धी, शास्त्र = शैवसिद्धान्त, परामृत = परा अमृत, चिन्ता = विर्मश, सिन्धति = आनन्द का सिन्धु (बहाता है), चेतसि = अन्तः करण में, निर्वृति = मुक्ति पाकर, धारा = प्रवाह।

भावार्थ

हे शंकर! सच है कि व्रत, दान, स्नान, तप इत्यादि सांसारिक दुखों का नाश करते हैं परन्तु आप सम्बन्धी शास्त्र (शैव सिद्धान्त) रूपी अमृत विर्मश में लाने से अन्तः करण में सांसारिक बन्धनों से मुक्ति पाकर आनन्द का सिन्धु बहाता है।

नृत्यति गायति हृष्यतिगाढं
संविदियं मम भैरव नाथ ।
त्वां प्रियमाप्य सुदर्शनमेकं
दुर्लभमन्यजनै समयज्ञम् ।।९।।

शब्दार्थ

नृत्यति = नाचती है, गायति = गाती है, हृष्यति = हर्ष (आनन्द) को पाती है, गाढं = गहन, संविद् = संवित प्रिया, मम = मेरे, भैरवनाथ = हे भैरवनाथ, त्वं = तुझे, प्रियम् = प्रिय को, आप्य = पाकर, सुदर्शनम् = सुन्दर, एकं = अद्वितीय (unparalleled), दुर्लभ = दुर्लभ पाये जाने, अन्यजनै = दूसरे और किसी पुरुष, सम = समान, यज्ञ = यज्ञों।

भावार्थ

हे भैरवनाथ! मेरी संवित् प्रिया आप प्रिय को पाकर जो अति सुन्दर है, अद्वितीय है मेरे समान किये हुए यज्ञों वाले आप के बिना दूसरी किसी को पाये जा सकने योग्य नहीं है। आप से समावेश पाकर नाचती है, गाती है, गहन आनन्द लेती है।

वसु रस पौषे कृष्ण दशम्या-
मभिवन गुप्तः स्तवमिमकरोत् ।
येन विभुर्भव मंरु सन्तापं
शमयति झटिति जनस्य दयालु ।।१०।।

शब्दार्थ

वसु = ८ (आठ), रस = ६ (छः), पौष = ९ (नौ), कृष्ण = कृष्णपक्ष, दशम्याम् = दशमी, अभिनवगुप्त = अभिनवगुप्त ने, स्तव = स्तोत्र, इमम् = यह, अकरोत् = रचा, येन = जिससे विभुर = कठिन, भव = संसार रूपी, मरु = मरुस्थल, सन्ताप = संकटके, शमयति = शान्त करता है, झटिति = शीघ्र, जनस्य दयालु = लोगों के दयालु (शंकर)।

भावार्थ

यह स्तोत्र श्री अभिनवगुप्त ने संवत् ९६८ के पौष मास के कृष्ण पक्ष की दशमी को रचा, जिससे संसार रूपी मरुस्थल के कठिन संकट को वह लोगों के दयालु (शंकर भगवान्) शीघ्र ही शान्त कर देते हैं।

हरिरेव जगज्जगदेव हरिः
हरितो जगतो न हि भिन्नमणुः।
इति यस्य मतिः परमार्थगतिः
स नरो भवसागरमुत्तरति ।।११।।

शब्दार्थ

हरि = शिव (as per Rigved), एव = ही, जगत = जगत है, जगद् = जगत्, एव = ही, हरि = हरि है, हरितो = हरि में, जगतो = जगत में, न = नहीं, हि = किन्तु, भिन्नम् = भिन्नता, अणु = ज़रा भर भी, इति = इस प्रकार, यस्य मति = जिस की बुद्धि है, परमार्थ = परमार्थ, गति = क्रम (course), स नरो = वही पुरुष, भवसागरम् = संसार सागर को, उत्तरति = पार करता है।

भावार्थ

शिव ही जगत है, जगत ही शिव है, हरि और जगत में तनिक भी भिन्नता नहीं, इस प्रकार जिस की बुद्धि इस परमार्थ की गति को मानता है, वही पुरुष इस संसार को पार कर जाता है।

आदावन्ते चिद्रस रूपं
मध्येचिद्रस बुद बुद रूपम् ।
भातं भातं भा रूपं स्यात् नो
भातं चेन्नि तरां न स्यात् ।।१२।।

शब्दार्थ

आदौ = आदि, अन्ते = अन्त में, चित् = चित्, रस = रस, रूपं = रूप ही है, मध्ये = बीच में भी, चित् रस = चितरस, बुदबुद = भेदमय (बुलबुला), रूपम् = रूप जैसा है, भांत = बार, भांत = बार, भा = प्रकाश, रूप = रूप, स्यात् = समावेश हो जाना चाहिए, नो = यदि नहीं हो, भांत = प्रकट (प्रकाश द्वारा), चेन्नि = भेदमय जगत, तरां = सत्ता, न = नहीं, स्यात = है।

भावार्थ

यह सारा जगत आदि और अन्त में चित्तरूप ही है। मध्य में जगत भेदमय बुलबुला जैसा हैं बार-बार इस चिद्रूप का विमर्श करने से इस प्रकाश रूप चित्त के साथ समावेश (लीन) होना चाहिए। यदि यह भेदमय जगत प्रकाश से भिन्न हो तो इस भेद की सत्ता ही नहीं है।

श्री स्वामी विद्याधर कृत राज्ञास्तोत्र

काश्मीरी अनुवादक :- श्री स्वामी महादेव काक

।। ओं नमः श्री जगदम्बायै ।।

ओं विश्वेश्वरी निखिलदेव महर्षि पूज्या
सिंहासना त्रिनयना भुजगोपवीता ।
शङ्खाम्बुजास्यऽमृत कुम्भक पञ्चशाखा
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ।।१।।

जगदीशवरी, यमिस देव महाऋषि ति पूज़ान
सिंहासनस प्यठ़ बिहित त्रिनेत्र त सरुफ नाल्य
अथि छुस खड़ग अमृत नोट बियि शंख त पंपोश
न्यथ बनि तनम प्रसन्न सोय्य राज्ञा भवानी ।।१।।

जन्माटवी प्रदहने दव वह्नि भूता
तत्पाद पङ्कज रजो गत चेतसां या ।
श्रेयोवतां सुकृतिनां भवपाश भेत्त्री
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ।।२।।

अमि सन्दय चरण मनस मंज़ इम धारवन्य छी
ज़ालान तिहुन्द जन्म वन ज़न दीदि अग्नै
भक्तिन इथ्यन युस ़चटान ज्यन मरण बन्धन
न्यथ बनितनम प्रसन्न सोय्य राज्ञा भवानी ।।२।।

देव्या यया दनुजराक्षस दुष्ट - चेतो
न्यग्भावितं चरण नूपुर शिञ्जितेन ।
इन्द्रादि देव हृदयं प्रविकासयन्ती
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ।।३।।

यमिह दीविय असुर धानव बियि दुर्ज़न
तल हयतिमति चरणके रुण्य शुण्य सीत्य
इन्द्रादिकन हृदय छय यस फुलनावान
न्यथ बनितनम प्रसन्न सोय्य राज्ञा भवानी ।।३।।

दुखार्णवे हि पतितं शरणागतं या
चोद्धृत्य सा नयति धाम परं दयाब्धिः ।
विष्णुगजेन्द्रमिव भीत भयापहर्त्री
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ।।४।।

शर्नागतन छय युसॅ दयासागर भवानी
दुख सागरह मन्ज़ह कड़ित मुक्ति दिवानी
भय मंज़ रछान, युथ रुछुय नारायनन होस
न्यथ बनितनम प्रसन्न सोय्य राज्ञा भवानी ।।४।।

यस्या विचित्रमखिलं हि जगत्प्रपञ्चं
कुक्षौ विलीनमपि सृष्टि विसृष्टिरूपात् ।
आविर्भवत्यविरतं चिदचित्स्वभावं
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ।।५।।

जंगमतॅ थावर जगत नानाप्रकारी
उत्पत त बिथि प्रलय रूप किन्य निथ यमिस मंज़
लीन आसिथय बियितति नोन नेरवन्य छय
न्यथ बनितनम प्रसन्न सोय्य राज्ञा भवानी ।।५।।

यत्पाद पङ्कजरजः कणज प्रसादा –
द्योगीश्वरैर्विगत कल्मषमानसैस्तत् ।
प्राप्तं पदं जनिविनाशहरं परं सा
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ।।६।।

योगीश्वरौ यसन्दे तलपति मल सूत्य
गालिथ पनुन मनुक मल प्रोवुक परम पद
यमि किन्य तिमन अद छिनह ज्यनमरणय
न्यथ बनितनम प्रसन्न सोय्य राज्ञा भवानी ।।६।।

यत्पादपङ्कजरजांसि मनोमलानि
संमार्जयन्ति शिवविष्णुविरिञ्चिदेवैः ।
मृगयान्यऽपश्चिमतनो प्रणुतानि माता
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ।।७।।

यमि सन्ध्य चरण शिव विषण ब्रह्मा ति छारान
पश्चात् जन्म पुरुष इमनय नमान छिय ।
यम्य सन्ज़य पादन हन्ज़ गर्द मन मल छय कासान
न्यथ बनितनम प्रसन्न सोय्य राज्ञा भवानी ।।७।।

यत्पादचिन्तन दिवाकर रश्मि माला
चान्तर्बहिष्करणवर्ग सरोजषण्डम् ।
ज्ञानोदये सति विकास्य तमोपहर्त्री
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ।।८।।

यमि सन्ध्य चरण समरणि हन्दय सिर्यिच्य ज़चमाल
अन्तः करण बहिश्करण पंपोश डलसय ।
फुलवान छह ज्ञानच वुज़न्य गट सारय ति कासान
न्यथ बनितनम प्रसन्न सोय्य राज्ञा भवानी ।।८।।

यद्दर्शनामृतनदी महदोघयुक्ता
संप्लावयत्यखिल भेद गुहास्वऽनन्ता ।
तृष्णाहरा सुकृतिनां भवतापहर्त्री
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ।।९।।

दर्शन नदी यसन्ज़ अमृत वानि भरिथय
भिन्न भावचन गुफन योप अनवन्य अननतथ
चटवन्य छि त्रेश सत्जनन संताप नशवन्य
न्यथ बनितनम प्रसन्न सोय्य राज्ञा भवानी ।।९।।

हंसस्थिता सकलशब्दमयी भवानी
वाग्वादिनी हृदयपुष्कर चारिणीया ।
हंसीव हंस रजनीश्वर वह्नि नेत्रा
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ।।१०।।

हसंस खसिथ भगवती युस शब्द रूपी
कथ कर वन्यि त नचवनीं हृत कमलसय मन्ज़
जन हंसिनी सूर्य चन्द्रम अग्न नेत्रौ
न्यथ बनितनम प्रसन्न सोय्य राज्ञा भवानी ।।१०।।

या सोमर्सूयवपुषा सततं सरन्ती
मूलाश्रयात्तडिदिवाऽऽविधिरन्ध्रमीढ्या ।
मध्यस्थिता सकलनडिसमूह पूर्णा
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ।।११।।

युसह मूलाधार प्यठ सदा सूर्य चन्द्रम रूपी
फेरान छह ज़न वुज़मला ब्रह्मरेन्द्रसय तान्य
नाड़ी क्षलिस युसह बिहित मन्ज़बाग छय पूर्ण
न्यथ बनितनम प्रसन्न सोय्य राज्ञा भवानी ।।११।।

चैतन्यपूरित समस्तजगद्विचित्रा
मातृप्रमेय परिमाणतया चकास्ति ।
या पूर्णवृत्यहमिति स्वपदाधिरूढा
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ।।१२।।

सोरुय यि चैतन्य जगत नाना प्रकारी
ज़ान, जानवन्य, त जाननी त्रियि सत्य छय शूभान
युस पूर्ण वृच अहं किन्य पननिस पदस प्येठ
न्यथ बनितनम प्रसन्न सोय्य राज़ा भवानी ।।१२।।

या चित्क्रमाक्रमतया प्रविभाति नित्या
स्वातन्त्र्य शक्तिरमला गतभेदभावा ।
स्वात्म स्वरूपसुविमर्श परैः सुगम्या
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ।।१३।।

युस चित् शक्ति कर्म अकर्म किन्य भासवन्य न्यथ
स्वातन्त्र भाव निर्मल भिन्न भाव रुस्तुय
लबनी तिमन इम करान छि आत्म चिन्तन
न्यथ बनितनम प्रसन्न सोय्य राज़ा भवानी ।।१३।।

या कृत्य पञ्चक निभालन लाल सैस्तैः
सन्दृश्यते निखिलवेद्यगतापि शश्वत्।
सान्तर्धृता परप्रमातृपदं विशन्ती
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ता ।।१४।।

इम जन छि पंचकृति किस लगिमत्य विमर्शस
मन्ज़ प्रथ कुने त प्रथ कुनि मन्ज़छिस वुछानतिम
युस आसवन्य त पर प्रमात्र पदस अचवन्य
न्यथ बनितनम प्रसन्न सोय्य राज़ा भवानी ।।१४।।

याऽनुत्तरात्मनि पदे परमा–मृताब्धौ
स्वातंत्र्य शक्ति लहरीव बहिः सरन्ती।
संलीयते स्वरसतः स्वपदे सभावा
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ता ।।१५।।

युस पान्यि पान पननी थान उथानतिथै पाठ्य
युथ अमृत समन्द्र मंज़ उथान तरंगा
स्वरूप हाविथ बियि गछान मीलिथ तुतय छय
न्यथ बनितनम प्रसन्न सोय्य राज्ञा भवानी ।।१५।।

मेरोः सदैव हि दरीषु विचित्रवाग्भिः
र्गायन्ति यां भगवतीं परिवादिनीभिः।
विद्याधरा हि पुलकाङ्कितविग्रहाः सा
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ।।२६।।

वचनव कमव कमव किन्य सेतारनय प्यठ
न्यथ युस सुमीर पर्वतचन गुफनय मन्ज़
विद्याधर छि ग्यव वन्य रूम हर्ष सस्ती
न्यथ बनितनम प्रसन्न सोय राज्ञा भवानी ।।१६।।

राज्ञीं सदा भगवतीं मनसा स्मरामि
राज्ञीं सदा भगवतीं वचसा गृणामि।
राज्ञीं सदा भगवतीं शिरसा नमामि
राज्ञीं सदा भगवतीं शरणं प्रपद्ये ।।१७।।

न्यथ राज्ञा भगवती ज्यवि किन्य ग्यवान छुस
न्यथ राज्ञा भगवती मन किन्य सुरान छुस
न्यथ राज्ञा भगवती कल किन्य नमान छुस
न्यथ राज्ञा भगवती गछवुन शरण छुस ।।१७।।

राज्ञयाः स्तोत्रमिदं पुण्यं यः पठेद्भक्तिमान्नरः।
नित्यं देव्याः प्रसादेन शिवसायुज्यमाप्नुयात् ।।१८।।

युस यहि पुण्य तुता परि राज्ञा भगवती हंज़
न्यथ तमसि देवी शिवरूपता प्राप्त करनाव अनुग्रह किन्य

इति श्री जगदम्बास्तुति - राजानक - विद्याधर
विरचिता शुभदा बोभूयात् इति शिवम्।।

शिवाय गुरवे नमः

श्री स्वामी विद्याधर कृत
श्री स्वामी राम गुरु स्तुति

हिन्दी रूपान्तरकार : विश्वनाथ जोत्शी (भट्ट)

यः सर्वात्माखिल जनविभुर्देव देवोमहेशः
स्वातन्त्र्यस्थो ध्रुवपदगतो निश्चलात्मा वरेण्यः
विश्वोत्तीर्णोभवभयहरः स्वेच्छया विश्वपूर्ण
स्तं श्री रामं त्रिभुवनगुरुं स्वात्मरूपं नमामि ।।१।।

भावार्थ

मैं तीन लोकों के गुरु देव जो मेरा अपना स्वरूप है, जो सब जड़ चेतन को सत्ता देने वाला अपनी इच्छा से क्रीडनशील, सभी जीवों में व्याप्त, देवों के भी देव महेश्वर, स्वातन्त्र्य अवस्था में स्थित, अविनाशी अटल तथा उत्तम है, विश्वमय होकर भी जगत से परे है और भक्तों का भवभय हरने वाला है। ऐसे श्री गुरु देव श्री राम जी को मैं शीश नमन करता हूँ ।।१।।

यस्मादीशात् प्रसरति शिवतत्त्व प्रभृति ज्यान्तं
विश्वमेतत्परमवपुषा स्थीयते येन सम्यक्।
यस्मिंस्तोयं इव क्रमतया लीयते वारिराशौ
तं श्री रामं त्रिभुवन गुरुं स्वात्म रूपं नमामि ।।२।।

भावार्थ

जो शिव तत्त्व से पृथ्वी तत्त्व तक ३६ तत्त्वात्मक जगत सृष्टि पाता है, जिसमें उत्तम स्वरूप से उत्कृष्ट स्थिति को प्राप्त होता है, जिनमें सागर में जल की भांति क्रमशः लय होकर संहार को प्राप्त होता है उन्हीं सदगुरु श्री राम की जो मेरा स्वात्मस्वरूप हैं, को प्रणाम करता हूँ।

ब्राह्मीं मूर्त्तिं भुवन जनने राजसीं यो बिभर्त्ति
तद्रक्षायां परमदयया वैष्णवीं सात्त्विकींच
तत्संहारेऽनलशततनुः तामसीं रौद्र मूर्त्तिं
तं श्री रामं त्रिभुवनगुरुं स्वात्म रूपं नमामि ।।३।

भावार्थ

तीन भुवनों की सृष्टि करने में जो रजोगुणमय ब्रह्मा का स्वरूप धारण करते हैं, स्थिति अर्थात् रक्षा करने में सत्त्वगुणमय परम दयालु विष्णु का स्वरूप धारण करते हैं तथा सृष्टि और स्थिति वाले जतग को संहार करने के लिए शतशः अग्नि युक्त तमोगुणमय रुद्र रूप धारण करते हैं, उन तीनों भुवनों के गुरु श्री राम को मैं सादर नमन करता हूँ जो मेरा अपना ही स्वरूप है।

संसाराब्धौ विषयमकरे दुस्तरेसंप्रमग्नाः
उद्धृत्यास्मिन परम कृपया भेद दृष्टिं विच्छिद्य।
शैवं स्थानमचलममलं प्रापिताः येन भक्ताः
तं श्री रामं त्रिभुवन गुरुं स्वात्म रूपं नमामि ।।४।।

भावार्थ

यह संसार सागर जो विषय रूपी मगरमच्छों से भरा है, भेदमय जगत से पार लगा कर अपार कृपा से भेद दृष्टि को काट कर अपने भक्तजनों को अभेद दृष्टि जिस गुरु ने उत्पन्न की तथा इन भक्तजनों को स्थायी शिवधाम पर पहुँचाया, मैं उन्हीं तीन भुवनों के गुरु श्री राम को जो मेरा अपना ही स्वरूप है, को नमस्कार करता हूँ।

अस्मिंल्लोके ह्युपमन्य्वन्वये यश्चमर्त्यावतार–
मायातिस्म तिमिरहरणः सज्जनानां हिताय
प्रकाश्यार्थं स्वमतयशसः प्रेरितो रुद्रव्रातैः
तं श्री रामं त्रिभुवन गुरुं स्वात्मरूपं नमामि ।।५।।

भावार्थ

रुद्रगणों से प्रेरणा पाकर सज्जनों को अज्ञान रूप अंधकार को दूर करने के लिए, तथा उन्हें आत्मज्ञान कराने के लिए, अपने मत (त्रिकमत) के यश को प्रसरित

(प्रचार) करने के लिए इस मनुष्य लोक में जिसने मनुष्य योनि में अवतार धारण किया उसी ऐसे श्री राम को, जो मेरा अपना स्वरूप है, को सादर नमन करता हूँ।

सूर्ये प्राप्ते धनुषि च गुरौ तारके शेतुलाया-
-माद्यै भौमे सुखगत बुधे शत्रुगे भार्गवेऽपि।
पङ्गु राह्योर्दशम सदने सिंहलग्नेतु जात-
स्तं श्री रामं त्रिभुवन गुरुं स्वात्मरूपं नमामि ।।६।।

भावार्थ

धनु राशि में सूर्य और बृहस्पति, तुला राशि में चन्द्रमा मंगल के घर में बुध, शुक्र के छटे घर में शनि दसवें घर में राहु, सिंह लग्न पर जिनका जन्म हुआ, ऐसे स्वात्मस्वरूप श्री राम सत्गुरु को मैं प्रणाम करता हूँ।

मूर्त्या शम्भु परम सुखदः तेजसा द्वादशत्मा
प्रकृत्यात्तु शिशिरकिरणः पावन श्चित्रभानुः।
शैवी दीक्षा गलितवृजिनैर्लक्ष्यते यश्चसद्भिः
तं श्री रामं त्रिभुवन गुरुं स्वात्म रूपं नमामि ।।७।।

भावार्थ

जिसका रूप कल्याणकारी शंकर जैसा परम सुखद था, स्वभाव से चन्द्रमा जैसा शीतल तेज में सूर्य जैसा, अग्नि के समान पावन, शैव मार्ग में दीक्षा पाकर जिसका संसार में जन्म मरण समाप्त हुआ है सत्पुरुषों को जिनसे साक्षात्कार हो सकता है उन्हीं आत्म स्वरूप सदगुरु श्री राम को मैं प्रणाम करता हूँ।

रूपं यस्य निखिल जगतां हृत्प्रमोदस्य हेतु
र्यद्दन्तानां किरणपटलै छात्र वृन्दा विरेजुः।
व्याख्यानेन प्रहसितमुखः कर्तनः संशयानां
तं श्री रामं त्रिभुवन गुरुं स्वात्मरूपं नाममि ।।८।।

भावार्थ

जिनका रूप सारे जगत में भक्त जनों के हृदय में प्रमोद (आनन्द) का कारण था, जिनके सुन्दर दांतों की किरणें छात्र (शिष्य) मण्डली को प्रसन्न चित करती थी,

हंसमुख होकर जो व्याख्यान करते करते सब संशयों को मिटा देते थे, उन अपना ही स्वरूप बने तीनों भुवनों के गुरु श्री राम को मैं नमस्कार करता हूँ।

बाल्यादेव परम तपसि दुःसहेवर्ततेस्म
विश्वमेतत् परम महिमा यश्च स्वात्मन्यद्राक्षीत्।
स्वात्मानं च जगति निखले ज्ञान दृष्टया सदैव
तं श्री रामं त्रिभुवन गुरुं स्वात्म रूपं नमामि ।।९।।

भावार्थ

जिन्होंने बाल्यावस्था कठिन तपस्या में बिताई, इस विश्व को (संवित्) महिमा युक्त अपने से भिन्न नहीं देखते थे। सारे जगत को अपनी ज्ञान दृष्टि के कारण अपना ही स्वरूप मानते थे ऐसे गुरु श्री राम जो मेरे स्वरूप से अभिन्न हैं, को नमन करता हूँ।

यः शैवाख्यं परमममृतं निर्गतंस्वाननाब्जात्
तत्पादाब्जानुगतमनसो भक्तवृन्दानपीप्यत्।
एतद्देहं परित्यज्य ह्यगाच्छाश्वतं शैवधाम
तं श्री रामं त्रिभुवन गुरुं स्वात्मरूपं नमामि ।।१०।।

भावार्थ

जिस श्रेष्ट गुरु ने शैव शास्त्र का सार (त्रिकमत्) अपने मुख कमल से निकला हुआ अमृत उन्हीं के चरण कमलों में रहकर एकाग्रमन से लगे हुए भक्त जनों को पिलाया। जो अन्त में इस पुण्य देह का त्याग करके शाश्वत शैव धाम को सिधारे, उन्हीं सतगुरु श्री राम को, जो मेरा अपना ही स्वरूप है, को प्रणाम करता हूँ, शीश नमन करता हूँ।

इति श्री स्वामी विद्याधरकृत गुरुस्तुतिः समाप्ता।।

स्व० श्री श्याम सुन्दर जतू कृत
श्री विद्याधरस्तवः

हिन्दी रूपान्तरकार : विश्वनाथ जोत्शी (भट्ट)

ओं तत्त्वतीर्णोऽतुल निज चमत्कारपूर्णो ह्यनन्या
पेक्षी स्वैरी कचन परमो भैरवो बोध भानुः
मालिन्यान्ध्यं त्रिविधमखिलं नाशयित्वा हृदब्ज–
संकोचं नः स्वकर निकरेणोदितः सन्धुनोतु ।।१।।

शब्दार्थ

तत्त्वोतीर्ण = शिव तत्त्व से पृथिवी तत्त्व तक विश्व से उत्तीर्ण, अतुलनिज = अपने असीम, चमत्कार पूर्णो = विश्वमयता रूप चमत्कार से पूर्ण, अनन्यपेक्षी = किसी की सहायता विना, स्वैरी = स्वतन्त्र है, कचन परम = प्रकाश रूप, चमकना जिसका गुण है, भैरवः भी = संसार से उत्पन्न हुआ कठिन भय, रव = उस भय से उत्पन्न हुआ रोना शब्द, अर्थात् भेद प्रथात्मक संसार के त्रास को नाश करने के तत्पर, बोध भानु = योगियों के हृदय में चित्सूर्य उदय करता हुआ, मालिन्यान्धम् = मल रूपी अंधकार (आणव, मायीय, कार्म), त्रिविधमखिलम् = तीन प्रकार का, नाशियित्वा = मिटाकर, हृदब्ज संकोच = ऐसे हृदय कमल का संकुचित भाव, नः = हमारा स्वकरनिकरेण = अपने बोध रूपी किरणों से, उदितः = उद्धित हुआ, संधुनोतु = अच्छी तरह से दूर करे।

भावार्थ

अपने असीम शिवतत्त्व से पृथ्वी तत्त्व तक होने वाले विश्व से उत्तीर्ण (३६ तत्त्वों से उत्तीर्ण) विश्वमयता रूप चमत्कार से पूर्ण, बिना सहायता के, स्वतन्त्र, प्रकाश रूप, भेद प्रथात्मक, संसार के त्रास को नाश करने में तत्पर, योगियों के हृदयों में चित्सूर्य उदय करता हुआ तीन मल रूपी (अणव, मायीव, कार्म) अंधकार मिटाकर हमारे हृदय कमल का संकोच, उद्धित हुआ अपने बोध रूपी किरणों से दूर करें।

या व्यक्ते प्राक् किल परमहामंत्रभूमिः पराख्या
पश्यन्ती तामुपगतवती द्योतयन्त्यर्थ जातम्
भेदामर्शारिचन कुशला मध्यमा वैखरी या
व्यक्ता संविल्लसतु हृदिनः क्षोभ तूलाग्नि हेति ।।१२।।

शब्दार्थ

या = जो संवित् भगवती, व्यक्ते प्राक् = पश्यन्ती आदि अवस्था से प्रथम, परमहामन्त्र भूमि = अहम् इतिपूर्ण अहन्तामय महामन्त्र, पराख्या = परा शक्ति नाम वाली, पश्यन्ती तामुपगतवती = वही परा संवित जिसमें सारा भाव समूह विध्यमान है, द्योतयन्त्यर्थ जातम् = भेद से जितलाने वाली पश्यन्ती नाम वाली हो जाती है, भेदा-मर्शारचन कुशला मध्यमा = भेद से प्रकट होने पर स्मृति का विषय बने हुए मध्यमा, वैखरीया = पदार्थ रूप जगत रचाने वाली वैखरी नाम वाली, व्यक्त लंवितलसतु हृदिना = भेद प्रथात्मक विश्व जिससे नष्ट हो जाता है वहीं पर संवित भगवती हमारे हृदय में विकसित हो जाए, क्षोभ तूलाग्नि हेति = वही भेद प्रथा जिस पर शक्ति के परामर्श से अग्नि में रूई की भांति भस्म हो जाता है।

भावार्थ

अहन्तामय महामन्त्र परा संवित् शक्ति जिसमें भेद से जितलाने वाली पश्यन्ती हो जाती है तथा भेद से प्रकट होने पर स्मृति का विषय आभासित करने वाली (मध्यमा) तथा पदार्थ रूप वैखरी नाम वाली है। शिवतत्त्व से पृथ्वी तत्त्व तक का भेद प्रथा जगद्रप जिस परा संवित के परामर्श से अग्नि में रूई की भांति भस्म हो जाता है वही परा विद्या हमारे हृदय में विकसित रहे।

श्री श्री कण्ठादनुपम फला याहि सन्तान शाखा
याता तस्यां समधिगतवान् शैशवे शक्ति पातात्
श्री रामाख्यं गुरुमथ च तत् सेवयावाप्त धीर्यः
तं श्री विद्याधर गुरुवरं स्वात्मरामं नमामि ।।३।।

शब्दार्थ

श्री श्री कण्ठात् = श्रीमान् श्री कण्ठ नाथ से, अनुपम फला = अति उत्तम फल उत्पन्न करने वाली, याहि सन्तान शाखा, याता = सनतान नामक उत्पन्न करने वाली शाखा है, तत्र = उस शाखा रूप परम्परा से, समधिगतवान् = प्राप्त किया, शैशवे = बालावस्था में (श्री विद्याधर) शक्ति पातात् = ईश्वरानुग्रह से, श्री रामाख्यम् = परम पूज्य स्वतन्त्र योगेश्वर श्री राम स्वामीपाद, अथच = और उस परमोत्तम गुरु पाद को, तत्सेवया = शरीर, वाणी, मन से सेवा करने से, अवाप्त = प्राप्त किया, धी = ज्ञानमय बुद्धि, यः = जो, तं = उस, श्री विद्याधर = उत्तम विद्या अर्थात् परा विद्या को धारण करने वाले, गुरुवरं = सत्गुरु को, स्वात्म रामं नमामि = अपने स्वरूप में रमण करने वाले श्री स्वामी विद्याधर पाद नाम सतगुरु को (सिर झुकाकर) प्रणाम करता हूँ।

भावार्थ

श्री श्री कण्ठनाथ जी से अति उत्तम फल उत्पन्न करने वाली शाखा के परम्परा से बाल्यवस्था में ही ईश्वर अनुग्रह से परम पूज्य स्वतन्त्र योगेश्वर श्री राम स्वामीपाद को प्राप्त किया। उस परमोत्तम गुरु पाद को शरीर, वाणी, मन से सेवा करने से ज्ञानमय बुद्धि प्राप्त की, उस उत्तम विद्या अर्थात् परा विद्या को धारण करने वाले (विद्याधर) सत्गुरु को अपने स्वरूप में रमण करने वाले श्री स्वामी विद्याधर पाद को प्रणाम करता हूँ।

देहाद्यात्मेत्यखिल जगतामान्ध्य पूर्णो विवाद–
तुच्छोच्छेद्यो यदपिच शिवः शास्ति चैतन्यमात्मा
आमृश्यैवं विपिनमगमद्रागजालस्य छित्यै
तं श्री विद्याधर गुरुवरं स्वात्म रामं नमामि ।।४।।

शब्दार्थ

देहाद्यात्म = देह ही आत्मा है, इति = इस प्रकार, अखिल-जगताम् = सब मनुष्यों का, आंध्यपूर्णो विवाद = असत् पर सत् का निश्चय होने का विवाद (ऐसा अंधकारपूर्ण विवाद), तुच्छ = व्यर्थ है, अच्छेद्य: = ऐसे सिद्धान्त का नाश करना आवश्यक है; यदपिच = बलिक, शिवः शासित = भगवान् शिव के आज्ञा अनुसार, चैतन्यमात्मा = चेतना ही आत्मा है (देह नहीं), आमृश्यैवं = ऐसे ही पूर्वोक्त (प्रकार से विचार करके), विपिनमगमद्रागजालस्य छित्यै = जो राग रूप जाल मिटाने के लिए वन में चले गए, तं श्री विद्याधर गुरुवरं स्वात्म रूपं नमामि = ऐसे स्वामीपाद विद्याधर श्री गुरु को मैं अपने स्वरूप में पाकर प्रणाम करता हूँ।

भावार्थ

'देह ही आत्मा है' इस प्रकार मनुष्यों का अंधकार पूर्ण व्यर्थ विवाद का नाश करना आवश्यक था। शिव सिद्धान्त अनुसार चेतना ही आत्मा है (देह इत्यादि नहीं) ऐसे ही पूर्वोक्त प्रकारसे विचार करके जो राग रूप जाल मिटाने के लिए वन में चले गए ऐसे श्री स्वामीपाद विद्याधर श्री गुरु को मैं अपने स्वरूप में पाकर प्रणाम करता हूँ।

कार्कोटाहेर्गहन भवने हिस्रं जीवैः परीते
शाक्तस्फारातिशय–विमलो जातसंविद् विकासः
क्रुद्धा हिंसा गुरुवर धिया मस्तकैर्यं प्रणेमुः
तं श्री विद्याधर गुरुवरं स्वात्म–रामं नमामि ।।५।।

शब्दार्थ

कार्कोटाहे = कार्कोट नाम वाला आठों नागराजों में प्रसिद्ध नागराज, गहन भवने = कठिन तथा विषम मार्ग वाले, हिंस्र जीवैः, परीते = जिसमें हिंसाशील शेर-रीछ आदि जीव रहते हैं, शाक्त स्फारा = शाक्त अमृत का स्फार, अतिशय विमलो = अत्यन्त निर्मल हुए अंर्थात् राग द्वेष पूर्ण भेद समाप्त हुआ, जातसंविद्विकास = संविद् देवी का विकास हुआ, क्रुद्धाहिंस्रा = क्रोधी तथा हिंसाशील जीव, गुरुवर धिया = यह हमारा गुरु है ऐसा मानकर, मस्तकैर्यं, प्रणेमुः = अपना सिर झुकाकरर जिनको प्रणाम करने लगे, तं श्री विद्याधर गुरुवरं स्वात्म रामं, नमामि = ऐसे श्री विद्याधर गुरु को मैं स्वात्म स्वरूप पाकर प्रणाम करता हूँ।

भावार्थ

आठ नागराजों में कार्कोट नाम वाला प्रसिद्ध नागराज है। यहाँ तक पहुंचने में कठिन कांटे आदि से भरे विषम मार्ग है। जहां हिंसाशील शेर-रीछ आदि जीव रहते हैं। परमेश्वर के अनुग्रह से शाक्त अमृत का स्फार होने से जिनका राग-द्वेष पूर्ण भेद समाप्त हुआ है तथा संविद् देवी का विकास होने से जहां क्रोधी तथा हिंसाशील जीव 'यह हमारा गुरु है' ऐसा मानकर अपना सिर प्रणाम करने के लिए झुकाते थे ऐसे श्री विद्याधर गुरु को मैं स्वात्म स्वरूप पाकर प्रणाम करता हूँ।

यस्या भूम्ना चकित चकितोऽभूदयंर्मत्य वर्गः
पादौ स्पृष्टं द्रुतमुपययौ प्रावृणो चाश्रमं तत्
नैतत् शर्मेत्यमर विवरं प्रापयः शैवधर्मा
तं श्री विद्याधर गुरुवरं स्वात्मरामं नमामि ।।६।।

शब्दार्थ

यस्या भूम्ना = जिस (योगेश्वर) के तपो महिमा से चकित चकितो = बहुत ही प्रभावित तथा आश्चर्य करता, अभूत = हुआ, अयं मर्त्यवर्गः = यह मनुष्य वर्ग, पादौस्पृष्टम् = उनके चरण कमलों का स्पर्श करने के लिए, द्रुतम = शीघ्र, उपययौ = उनके पास चला गया, प्रावृणौ चाश्रमं तत् = जन समुदाय से वह आश्रम भर गया (जहाँ स्वामी जी बैठते थे), नैतच्छर्म = (इससे) उन्हें प्रसन्नता न होकर क्षोभ रूपी विघ्न ही माना, एति = यह विचार कर, अमर विवरं = श्री अमरनाथ नामक गुफा पर, प्रापयः शैवधर्मा = शिव ज्ञान ही इष्ट तथा आचरण था जिसको, तं श्री विद्याधर गुरुवरं स्वात्मरामं नमाभि = ऐसे श्री विद्याधर स्वामी को मैं अपने स्वरूप में पाकर प्रणाम करता हूँ।

भावार्थ

जिस योगेश्वर के तपो महिमा से मनुष्य वर्ग उनके चरण कमलों का स्पर्श करने के लिए उनके पास आने लगा तथा उस समुदाय से उनका आश्रम भर गया (जहां स्वामी जी बैठे थे) इससे क्षोभ रूपी विघ्न ही माना (disturbance) ऐसा विचार कर श्री अमरनाथ नामक गुफा पर शिवज्ञान ही जिसको इष्ट था ऐसे श्री विद्याधर स्वामी को मैं अपने स्वरूप में पाकर प्रणाम करता हूँ।

आश्यानोयं चितिरसमया सर्वतो भाववर्गः
नानारूपं श्रयति द्रवतामागतोऽव्यक्ततां च
इत्यानीतः स्वगृहममरे शेनयः शिक्षणार्थ
तं श्री विद्याधर गुरुवरं स्वात्मरामं नमामि ।।७।।

शब्दार्थ

आश्यानः = भेद से परार्मश करने पर (भेद पकड़ने पर), अयं = यह, चितिरसमयः = चित् रस ही केवल, सर्वतः = हरप्रकार से, भाव वर्गः = प्रत्यक्ष विषय जो सारा पदार्थ वर्ग है, नानारूपं = नाना प्रकार जड़ चेतन जगत प्रपञ्च स्वरूप, श्रयति = धारण करता है,द्रवतामागतोऽव्यक्ततांच = पूर्ण प्रमातृभाव (चित्सूर्य किरणों से निगला हुआ) अव्यक्त भाव को प्राप्त करता है, इति = इस दृष्टान्त से, आनीतः = पहुँचा, स्वगृहम् = अमरनाथ गुफा नामक स्थान पर, अमरेशेन = अमृतेश्वर जिस का नाम है, यः = ऐसा जो, शिक्षणार्थं = साधना के प्रयोजन से, तं श्री विद्याधर = उस विद्याधर स्वामी, गुरुवरं स्वात्मरामं नमामि = को मैं अपने स्वरूप में पाकर नमन करता हूँ।

भावार्थ

यह चित रस केवल भेद से परामर्श करने पर हर प्रकार से प्रत्यक्ष विषय (सारा विद्य वर्ग) नाना प्रकार जड़ चेतन जगत प्रपञ्च स्वरूप धारण करता है। पूर्ण प्रमातृभाव (Subjectivity) चित्सूर्य किरणों से पिगला हुआ अव्यक्त भाव को प्राप्त करता है। इस दृष्टान्त (को सामने रखकर) जो अमरनाथ गुफा नामक स्थान पर जिसका अमृतेश्वर भी नाम है, पहुंचा, ऐसे उस विद्याधर स्वामी को मैं अपने स्वरूप में पाकर नमन करता हूँ।

स्वनारण्या वट–झर महीध्रेशुचीर्णव्रतोयो
योगेक्षेमी वितरणमतिश्चिन्तयदात्म ज्ञानम्
दानं भूत्यै भवति जगतां शिक्षियंश्चाविनीतान्
तं श्री विद्याधर गुरु वरं स्वात्मरामं नमामि ।।८।।

शब्दार्थ

सान् (वषु) = ऊंचे पहाड़ी स्थानों पर, अरण्येषु = वनों में, अवटेषु = गढ़ों में, झरेषु = झरनों पर, महीध्रेषु = पर्वतों पर, चीर्णव्रतः = तपस्या रूप वृत वाला, योगक्षेमी = न प्राप्त हुए प्राप्त करना योग है, प्राप्त हुए को पालन करना क्षेम है, ऐसे योगक्षेमी योगेश्वर, वितरणमति = दान के लिए निश्चिय वाला, चिन्तयदात्मज्ञानं = विचार किया आत्म ज्ञान ही, दानं भूत्यै भवतिजगतां = दान देना चाहिए (जिससे दाता और लेने वाला दोनों उत्तम संपत्ति के अधिकारी हों)। शिक्षयंश्चा विनीतान् = मलिन चित्त वालों को भी शिव ज्ञान का पात्र बनाता रहा, तं श्री विद्याधर गुरुवरं स्वात्मरामं नमामि = ऐसे श्री विद्याधर स्वामी को मैं अपने स्वरूप में पाकर नमन करता हूँ।

भावार्थ

ऊंचे पहाड़ी स्थानों पर, वनों में, गढ़ों में, झरणों पर, पर्वतों पर, तपस्या रूप व्रत का जिसने पालन किया, तथा ऐसे योग क्षेमी योगेश्वर ने निश्चय किया कि आत्मज्ञान ही दान करना उचित है इस प्रकार मलिन चित्त वालो को भी शिव ज्ञान का पात्र बनाता रहा, ऐसे श्री विद्याधर स्वामी को मैं अपने स्वरूप में पाकर नमन करता हूँ।

क्रीड़ाशीलो वलित–स्वतनुश्चेत्य संकोचधर्मा
संसारी स्याच्छिव इत्युदितं शक्ति सूत्रेषु सम्यक्
तत्रोपायं स्वकरमविदद्युद्यमो भैरवो यः
तं श्री विद्याधर गुरुवरं स्वात्मरामं नमामि ।।९।।

शब्दार्थ

क्रीड़ाशील = क्रीड़ाशील (शिव), वलितस्वतनुः = पूर्णता छोड़कर आवण (अपूर्ण), मायीय (भेदमय), कार्म (वासनामय) आवरण से अपने आपको ढांप कर, चेत्य संकोचधर्मा = सुखदुख रूप संकोच, शरीर आदि का अभिमान तथा अल्प पदार्था पर अहंता रखने वाला, संसारीस्यात् = इन कारणों से दबा संसारी पशु बन जाता है, शिव = आनन्दमय शिव, इत्युदितं शक्ति सूत्रेषु सम्यक् = शक्ति सूत्रों में जिसका प्रत्यभिज्ञा हृदय नाम है (सू = ५६), तत्रोपाय सुकर = ऐसी दशा में संसारी का पतित होना न सहन करता हुआ (जो योगश्वर), अविदत् = जान सका, उद्यमो भैरवः = इन्द्रियों द्वारा निकल कर बिखरी हुई विमर्श शक्ति का रोकथाम करना अर्थात् स्वात्मरूप देखना उद्यम कहलाता है विभिन्न विकल्प को समूचकर ग्रास करना भैरव कहलाता

है। यः = जो, तं श्री विद्याधर गुरुवरं स्वात्म रामं नमामि = ऐसे श्री विद्याधर गुरु को स्वात्म रूप में स्थित होकर नमन करता हूँ।

भावार्थ

क्रीड़ाशील (शिव) पूर्णता छोड़कर आणव (अपूर्ण) मायीय (भेदमय), कार्म (वासनामय) आवरण से अपने आपको ढांप कर, सुख दुख रूप संकोच (शरीर, आदि का अभिमान तथा अल्प पदार्थ पर अहंता रखने) वाला इन कारणों से दबा संसारी पशु बन जाता है आनन्दमय शिव (शक्ति सूत्रों में जिसका प्रत्यभिज्ञा हृदय नाम है) ऐसी दशा में संसारी का पतित होना न सहन करता हुआ (जो योगेश्वर) यह दशा जान सका तथा इन्द्रियों द्वारा निकल कर बिखरी हुई विमर्श शक्ति का रोकथाम करना अर्थात् स्वात्म स्वरूप देखना उद्यम कहलाता है, विभिन्न विकल्प को समेटकर ग्रास करना भैरव कहलाता है, ऐसे श्री विद्याधर स्वामी स्वात्म स्वरूप को मैं प्रणाम करता हूँ।

शैवामनाय प्रवचन रति शंकरो योहिदेवः
पीयूषांशु इव मुख रूचाऽहलादयन शिष्यसंघान्
दीप्तया भास्वान इव हृदय पंकेरु होद् बोध हेतुः
तं श्री विद्याधर गुरुवरं स्वात्मरामं नमामि ।।१०।।

शब्दार्थ

शैवाम्नाय = शिव सम्बंधी शास्त्र, प्रवचन रति = व्याख्यान करने पर, शंकरोयोहिदेवः = जो साक्षात् शंकर जैसा है अथवा शिव ही परम देव है जिसका, पीयूषांशु इव = अमृत किरण धारण करने वाला चन्द्र देव जैसा, मुख रूचा = मुख की शोभा से, आहलादयन = सुख देने वाला है, शिष्यसंघान् = छात्र (शिष्य समूहों को) दीप्त्या = विमर्श प्रकाश से, भास्वान् इव = सूर्य देव जैसा, हृदय पंकेरुहोद्बोध हेतुः = हृदय कमल के अज्ञान रूप संकोच को मिटाकर, ख्याति = (पूर्ण ज्ञान) रूप विकास के कारण बने हैं, तं श्री विद्याधर गुरुवरं स्वात्मरामं नमामि = ऐसे श्री विद्याधर श्रेष्ट गुरु को जो मेरा अपना स्वरूप है नमन करता हूँ।

भावार्थ

शिव ही परम देव है ऐसे शैव शास्त्र (सिद्धान्त) के व्याख्यान में लगे हुए अपने शिष्य समुदाय को समझाने हेतु जिसका मुख अमृत बरसाने वाला (शीतल) चन्द्रमा की

तरह आह्लाद देने वाला तथा सूर्य की तरह दीप्तिमान हृदय कमल को प्रफुल्लित करने वाला है ऐसे श्री विद्याधर गुरु श्रेष्ट को जो आत्म आनन्द में लगे हैं, को मैं सादर प्रणाम करता हूँ।

जज्ञे लग्ने धनुषि सविधौ यस्तुमीनेऽथ केतौ
भौमे सौरे रतिगृहगते कर्कटे चोष्म रश्मौ
शुक्रे ज्ञेज्ये नवमगृहणे कन्यकायां चराहौ
तं श्री विद्याधर गुरुवरं स्वात्मरामं नमामि ।।११।।

शब्दार्थ

जज्ञे लग्ने धनुषि = धनु लग्न पर जो (श्रेष्ट महात्मा) उत्पन्न हुए थे, सविधौयस्तु मीनेऽथ केतौ = मीने राशि में केतुथा, भौमे सौरे गृहगते = शनि तथा मंगल जब सातवें घर में था। कर्कटे चोष्मरश्मौ = कर्कट में जब सूर्य था, शुक्रे ज्ञेज्ये नवम गृहगते = शुक्र बुद्ध और वृहस्पति नवें घर में, कन्य कायां च राहौ = कन्या में राहू था, तं श्री विद्याधर गुरुवरं स्वात्मरामं नमामि = ऐसे श्री विद्याधर गुरुवार को मैं अपने स्वरूप में पाकर नमन करता हूँ।

भावार्थ

जो (श्रेष्ठ गुरु) धनु लग्न पर उत्पन्न हुए थे, जिनका मीन राशि में केतु था। शनि तथा मंगल सातवें घर में, कर्कट में सूर्य शुक्र बुद्ध और वृहस्पति नवें घर में कन्या के साथ राहू था, ऐसे श्री गुरुदेव श्री विद्याधर को मैं स्वात्मरूप पाकर नमन करता हूँ।

भूयात् स्यात् मेलनं प्रतिभुवः
सूत्रं शिवस्यान्तिमम्
सम्यमक् योप्यवर्धाय शाश्वत पदं
शैवं सहस्यामले।
बाणाद् वयभ्रशरे समेऽपिच
तृतीयस्यां निशान्ते ययौ
श्री विद्याधर स्वामि देशक मर्णिभूयादघध्वंस कृत् ।।१२।।

शब्दार्थ

भूयः स्यात्प्रतिमीलनम् = ऐसे योगी को पारमार्थिक जानकारी (साक्षात्कार) अन्दर और बाहिर हर समय (निरन्तर) होता है, प्रतिभुवः = कर्म का फल देने वाला, सूत्र शिवस्यान्तिमम् = शिव सूत्र का अन्तिम सूत्र (आणव उपाय), सम्यग्योप्यवर्धाय = शिव शासन के अनुसार आचरण करने से द्वैत नष्ट होने पर उसी परमेश्वर से मिले, शाश्वतं पदं शैवम् = न टलने वाले शिवधाम को, बाण-द्वि-अभ्रशरेसमेऽपिच-तृतीयस्यां = ५०२५ (सं० संवत्) तृतीया, सहस्य = मार्ग शीर्ष मास के, अमले = शुक्ल पक्ष, निशान्ते = रात्रि के पिछले भाग में, (उषा = काल में), ययौ = पहुंच गया, श्री विद्याधर स्वामि दैशिक मणि भूयादघ ध्वंसकृत = वही विद्याधर स्वामी नाम वाला उत्तम उपदेशक आणव आदि मल रूप पापों को नाश करने वाला हो।

भावार्थ

जो योगेश्वर (परमेश्वर से पृथक हुआ जीव) शिवशासन के अनुसार आचरण करने से द्वैत नष्ट होने पर उसी परमेश्वर से मिला तथा आणव उपाय द्वारा ऐसे योगी को पारमार्थिक जानकारी (साक्षात्कार) अन्दर और बाहिर हर समय (निरन्तर) हुआ करती थी, वही योगेश्वर विद्याधर (स्वामि नाम वाले ५०२५ (सप्तर्षि संवत्) मार्ग शीर्ष तृतीया की शुक्ल पक्ष रात्रि के अन्तिम भाग (उषा काल) में शाश्वत शिवधाम को पहुंच गये, वही योगेश्वर हमारे आणव आदि मल रूप पापों को नाश करने वाला होवे।

यत्पाद पद्म संर्स्पशात् सत्त्वरं श्यामचेतसाम्
सुन्दरो जायते बोधः शरणं सोऽस्तु नः शिवः ।।१३।।

शब्दार्थ

यत् = जिस परम शिव के, पाद पद्म संस्पर्शात् = चरण कमलों के संस्पर्श से, सत्त्वरं = शीघ्र ही, श्याम चेतसा = भेद प्रथा से मलिन हुआ, जायते = उत्पन्न हो जाता है, सन्दरो बोधः = उत्तम ज्ञान, शरणं = शरण, सः = ऐसा, अस्तु = हो, नः शिवः = हमको परम शिव।

भावार्थ

भेद प्रथा से मलिन बने हुए हम सब परम शिव शरण हों, जिन परम शिव के चरण कमलों के संस्पर्श से उत्तम ज्ञान उत्पन्न होता है। अस्तु!

इति विद्याधर स्तवः समाप्ता।

स्व० श्री निरञ्जन नाथ शास्त्री सागाम कृत
श्री महादेव गुरु स्तुति

हिन्दी रूपान्तरकार : विश्वनाथ जोत्शी (भट्ट)

नीरन्द्र मोह तिमिरस्य विनाश दक्षं
यस्येन्दु मण्डलं इव वदनं चकास्ति
तृष्णा हरः सुकृत भाग्यवतां जनानाम्
तं श्री महादेव गुरुं नमामि ।१।

शब्दार्थ

नीरेन्द्र = घने (गहन), मोह = मोह के, तिमिरस्य = अंधकार को, विनाश = नाश करने के लिए, दक्ष = चतुर, यस्य = जिसका, इन्दु = चन्द्र, मण्डलं = मण्डल के, इव = समान, वदनं = मुख, चकास्ति = चमकता है, तृष्णा = तृष्णा का, हर = नाश करने वाला है, सुकृत = अच्छे कर्मों के, भाग्यवतां = भाग्यां से भरे हुए, जनानाम् = भक्तों को, तं = उस, श्री महादेव = मोक्ष लक्ष्मी से युक्त महादेव रूपी, गुरु = गुरु को, नामामि = मैं प्रणाम करता हूँ।

भावार्थ

गन्ने मोह के अंधकार को नाश करने के लिए चतुर जिसका मुख चन्द्र मण्डल के समान चमकता है (और) अच्छे कर्मों के भाग्यों से भरे हुए भक्तजनों को (जो) तृष्णा का नाश करने वाला है उस मोक्ष लक्ष्मी से युक्त महादेव गुरु को मैं प्रणाम करता हूँ।

वस्वर्तुनन्दाब्धिमितेहि वत्सरे
भानौ वृशे सविद्युजे मकरे कुजेच
मीन गुरौ भ्रातृ गृहे शाशङ्के।
लाभे कवौ लग्नगतेहि सौरे
धनेग्नि पुत्रेऽष्टमगे तमे च
कन्या विलग्ने गुरुराविरासीत्।
तं श्री महादेव गुरुं नमामि ।।२।।

शब्दार्थ

वसु = आठ, ऋतु = छः, नन्द = नौ, अबिध = चार, मितेहि = ऐसे, वत्सरे = संवत् में, यदा = जब, भानौ वृषे = वृष में, सविधुजे = सूर्य, और बुध, मकरे = मकर में, कुजे च = मंगल, मीने गुरो = मीन में गुरु, भातृ गृहे = तीसरे घर में, शाशांक = चन्द्रमा, लाभे = ग्यारहवें, कवौ = शुक्र, लग्नगते = लग्न में, सौरे = शनि,

धने = दूसरे घर में अग्नि पुत्रे = केतु, अष्टमगे = आठवें घर में, तमे च = राहु, कन्याविलग्ने = कन्या लग्न पर, गुरुः = श्री गुरु देव, आविरासीत् = प्रकट हो गए थे, तं श्री महादेव गुरुं नमामि = ऐसे श्री महादेव गुरु को नमन करता हूँ।

भावार्थ

सं० सप्तर्षि ४९६८ में जब वृष राशि में सूर्य और बुध, मकर राशि में मंगल, मीन राशि में वृहस्पति, तीसरे घर में (वृश्चिक में) चन्द्रमा, ग्यारहवें घर में (कर्क में) शुक्र, लग्न में शनि दूसरे घर में (तुला में) केतु, आठवें घर में (मेष में) राहु तथा कन्या लग्न पर श्री गुरुदेव (श्री महादेव) प्रकट हो गए थे, ऐसे मोक्ष लक्ष्मी से युक्त महादेव गुरु को मैं प्रणाम करता हूँ।

श्री पालदेवं च तथैव वासं
गार्ग्यम् स्वभावाद् गुण सन्निधानं
विकासयत् गोत्र पदं स्वकीयं
तं श्री महादेव गुरुं नमामि ।।३।।

शब्दार्थ

श्रीपालदेव वास गार्ग्य = गोत्र जिससे गुरुदेव सम्बन्धित थे, स्वभावात् = स्वभाव से ही, गुण = गुणों को, सन्निधनं = पवित्र खान है, विकासयत = विकसित किया, गोत्र = गोत्र के, पद = शब्द, स्वकीयं = अपने, तं श्री महादेव गुरुं नमामि = उस श्रेष्ट गुरु महादेव को मैं नमन करता हूँ।

भावार्थ

श्री पालदेव वास गार्ग्य गोत्र जो स्वभाव से ही पवित्र गुणों की खान है ऐसे अपने गोत्र के पद को जिसने प्रफुल्लित किया, ऐसे श्री महादेव गुरु को मैं प्रणाम करता हूँ।

आरभ्य बाल्यादपि जीवितान्ते
यो ब्रह्मर्चेयण व्यतीत्य कालम्।
स्वध्यायमभ्यस्य विरक्तिमाप
तं श्री महादेव गुरुं नमामि ।।४।।

शब्दार्थ

आरभ्य = आरम्भ करके, बाल्यात् = बाल्यकाल से, अपि = ही, जीवित = जीवन के, अन्ते = अन्त तक, यो = जिसने, ब्रह्मचर्येण = ब्रह्मचर्य व्रत से, व्यतीत = बिताकर, कालम् = समय, स्वाध्याय = शास्त्र ज्ञान, अभ्यस्य = अभ्यास करके, विरक्तम् = वैराग्य को, आप = प्राप्त किया, तं श्री महादेव गुरुं, नमामि = उस श्री महादेव गुरु को प्रणाम करता हूँ।

भावार्थ

बाल्यकाल से ही आरम्भ करके जीवन के अन्त तक जिसने ब्रह्मचर्य व्रत से समय व्यतीत किया और शास्त्र ज्ञान का अभ्यास करके जिसने वैराग्य प्राप्त किया, उस श्री महादेव गुरु को मैं प्रणाम करता हूँ।

बाल्ये चयः काव्यगुणैर्विदक्षो
नानाविधानाप्य महेश भक्तान्
विस्फारिता यस्य मतिर्विशुद्धां
तं श्री महादेव गुरुं नमामि ।।५।।

शब्दार्थ

बाल्ये = बचपन में, च = ही, यः = जो, काव्यगुणैः = काव्य गुणों (से), विदक्षो = निपुण (था), नानाविधान = नाना प्रकार के, आप्य = प्राप्त किया, महेशभक्तान् = शिव भक्तां को, विस्फारिता = स्फुरित हो गई, यस्य =जिसकी, मति = बुद्धि, विशुद्ध = निर्मल, तं श्री महादेव गुरुं नमामि = उस श्रेष्ट महादेव गुरु को मैं प्रणाम करता हूँ।

भावार्थ

बाल्यकाल से ही जिसने काव्य गुणों में निपुण होकर नाना प्रकार के शिव भक्तों का सम्पर्क प्राप्त किया, जिसकी बुद्धि (उनके संग से) निर्मल होकर स्फुरित हो गई, ऐसे श्री महादेव गुरु को मैं प्रणाम करता हूँ।

यो यौवने चानुग्रहाच्छिवस्य
विद्याधरं श्री गुरुमाससाद
तत्सेवयावाप्त विमर्श बुद्धिं
तं श्री महादेव गुरुं नमामि ।।६।।

शब्दार्थ

यो = जो, योवने = जवानी में, च = ही, अनुग्रहात = अनुग्रह से, शिवस्य = शिव के, विद्याधारं = विद्याधर, श्री गुरुं = श्री गुरु को, आससाद = प्राप्त (पा) कर गए, तत् = उसकी, सेवया = सेवा से, अवाप्त = प्राप्त की, विमर्श = विमर्श, बुद्धि = बुद्धि, तं श्री महादेव गुरुं नमामि = उस श्री महादेव गुरु को मैं प्रणाम करता हूँ।

भावार्थ

जो जवानी में ही शिव के अनुग्रह से श्री विद्याधर श्री गुरु को पा गए और जिनकी सेवा से विमर्श बुद्धि प्राप्त की ऐसे श्री महादेव गुरु को मैं प्रणाम करता हूँ।

कृतं पवित्रं स्वकुलं समन्तात्
यो निर्जगामाशु ध्रवं स्वगेहात
पृथक कृतं स्वासनमात्म लब्धये
तं श्री महादेव गुरुं नमामि ।।७।।

शब्दार्थ

कृतं = किया, पवित्रं = पवित्र, स्वकुल = अपने कुल को, समन्तात् = चारों तरफ से, यो = जो, निर्जगाम = निकल गया, अशु = शीघ्र ही, ध्रवं = निश्चय करके, स्वगेहात् = अपने घर से, पृथक = अलहायदा, कृतं = किया, स्वासनं = अपना आसन, आत्म = आत्मा, लब्धये = पाने के लिए, तं श्री महादेव गुरुं नमामि = उस श्री महादेव गुरु को मैं नमस्कार करता हूँ।

भावार्थ

अपने कुल को जिसने चारों तरफ से पवित्र किया, और स्वस्वरूप पाने के लिए जिसने निश्चय करके घर से निकल कर शीघ्र ही अपना आसन पृथक किया ऐसे श्री महादेव गुरु को मैं प्रणाम करता हूँ।

ज्वालामुखी पर्वत कन्धरायां
ध्यानावधूताखिल भेदभावः
यः क्रीड़यत् गोणस सर्पहिसैः
तं श्री महादेव गुरु नमामि ।।८।।

शब्दार्थ

ज्वालाामुखी = ज्वालामुखी (रिव्रव), पर्वत = पहाड़ी, कन्धरायां = गुफा में, ध्यान = ध्यान योग से, अवधूता = दूर हो गया, अखिल = सारा, भेदभावा, यः = जो, क्रीड्यत् = खेलने लगा, गौणस = गौणस (सर्पिणी), सर्प = सांप, हिंस्र = हिंसकों (के साथ), तं श्री महादेव गुरुं नमामि = ऐसे श्री महादेव गुरु को मैं प्रणाम करता हूँ।

भावार्थ

ज्वालामुखी (रिव्रव) पहाड़ी की गुफा में जिसका ध्यान योग से सब भेदभाव दूर हो गया (और) जो वहां के विशैले नाग, नागिनियों के साथ क्रीड़ा करता था ऐसे श्री महादेव गुरु को मैं प्रणाम करता हूँ।

मौनव्रताधैर्विमलं विधाय
चितं चिदात्मन्यवधाय सम्यक्
गुहाश्रितो रत्नपुरं विहाय
तं श्री महादेव गुरुं नमामि ।।९।।

शब्दार्थ

मौन = मौन, व्रताधै = व्रत आदि से, विमलं = निर्मल, विधाय = बना करके, चित्तं = चित को, सम्यक् = युक्ति से, गुहा = गुफा में (अन्तर्विमर्श), आश्रितो = रहने लगा, रंत्नपुर = धन, ऐश्वर्य इत्यादि (या रत्नपुर गांव), चिदात्मन्य = चिदात्मा में, अवधाय = रखकर, विहाय = छोड़कर, तं श्री महादेव गुरुं नमामि = ऐसे श्री महादेव गुरु को मैं प्रणाम करता हूँ।

भावार्थ

मौन व्रत आदि नियमों से, चित्त को निर्मल बना कर चिदात्मा में सावधानी से स्थापित किया, और धन एश्वर्य इत्यादि को छोड़कर अन्तर्विमर्श में निवास करने लगे। या रत्नपुर गांव को छोड़कर (ज्वालामुखी इत्यादि) गुफा में निवास करने लगे, ऐसे श्री महादेव गुरु को मैं प्रणाम करता हूँ।

तीर्थाश्रया यस्य पदानि रेजुः
भक्तिम् विरक्तिम् च तथात्मज्ञानम्
ददो जनेभ्यश्च स्वहृद्विकासम्
तं श्री महादेव गुरुं नमामि ।।१०।।

शब्दार्थ

तीर्था = तीर्थों के, आश्रय = आश्रयभूत, यस्य = जिसके, पदानि = चरण, रेजुः = चमकने लगे, विरक्तिम् = वैराग्य (और), भक्तिं = भक्ति, तथा = और, आत्मज्ञानम् = आत्मज्ञान (स्वरूपस्थिति), ददौ = दिया, जनेभ्यश्च = अपने भक्तों को, स्वहृद = अपने हृदय का, विकासम् = विकास (संवित् विकास), तं श्री महादेव गुरुं नमामि = ऐसे श्री महादेव गुरु को प्रणाम करता हूँ।

भावार्थ

तीर्थों के आश्रयभूत जिसके चरण कमल चमकने लगे, जिसने भक्तजनों को भक्ति वैराग्य, तथा आत्मज्ञान और हृदय का विकास अर्थात् संवित् विकास (ज्ञान) अपने भक्तों को दे दिया, ऐसे श्री महादेव गुरु को मैं प्रणाम करता हूँ।

विचित्र व्यारव्यानुरतिमवाप्य
भक्तैः स्वकीयैरमलात्म भावैः
दिल्लीमथानन्द गिरिं जगमा
तं श्री महादेव गुरुं नमामि ।।११।।

शब्दार्थ

विचित्र = विचित्र, व्यारव्यान = व्यारव्यानों के अनुरतिम् = अनुराग को, अवाप्य = प्राप्त करके, भत्कै = भक्तजनों के साथ, स्वकीयै = अपने, अमल = निर्मल, आत्म

भावै = अन्तःकरण वाले, दिल्ली = दिल्ली नगर के, अथ = फिर (तब), आनन्द = आनन्द, गिरिं = पर्वत, जगाम = चले गए, तं श्री महादेव गुरुं नमामि = ऐसे श्री महादेव गुरु को मैं प्रणाम करता हूँ।

भावार्थ

विचित्र व्याख्यानों के अनुराग को प्राप्त करके निर्मल अन्तःकरणों वाले भक्तजनों के साथ दिल्ली नगर में आनन्द पर्वत (करोलबाग) पर चले गए, ऐसे श्री महादेव गुरु को मैं प्रणाम करता हूँ।

दिवाकरं सज्जन पंकजानाम्
सदैव हृत्कंज विराजमानम्
दया निधिम् सर्वविपत्प्रमोचनम्
तं श्री महादेव गुरुं नमामि ।।१२।।

शब्दार्थ

दिवाकरं = सूर्य को, सज्जन = सज्जन रूपी, पंकजानाम् = कमलों के, सदैव = सदा, हृत = हृदय रूपी, कज = कमल (पर), विराजमानम् = विराजमान रहने वालो को, दया = दया के, निधिम् = कोश को, सर्व = सब, विपत् = विपत्तियों से, प्रमोचनम् = मुक्त करने वाले को, तं श्री महादेव गुरु नमामि = उस श्री महादेव गुरु को मैं प्रणाम करता हूँ।

भावार्थ

सज्जन रूपी कमलों के सूर्य को, सदा हृदय रूपी कमल पर विराजमान रहने वाले, दया क निदान, सब विपत्तियों से मुक्त करने वाले उस मोक्षलक्ष्मी युक्त महादेव गुरु को मैं प्रणाम करता हूँ

यश्चात्म मूर्त्या विकसच्छशांकः
स्वकीय शिष्यान् हृतताप जालं
शंका हरः संशय मेघ राशिं
तं श्री महादेव गुरुं नमामि ।।१३।।

शब्दार्थ

यः = जो, च = और, आत्म = अपनी, मूर्त्या = मूर्ति से, विकसत् = चमकता हुआ, शशांका = चन्द्रमा, स्वकीय = अपने, शिष्यान् = शिष्यों को, हृत = दूर किया, तापजाल = संताप का समूह, शंका = विविध शंकाओं, संशय = संशयों, मेघ = मेघ

(बादल), राशि = समूह (ढेर), तं श्री महादेव गुरुं नमामि = मैं उस श्री महादेव गुरु को प्रणाम करता हूँ।

भावार्थ

अपनी मूर्ति से जो चमकता हुआ चन्द्रमा शिष्यों के हृदय के संताप को शीतल बनाने वाला है और जो विविध शंकाओं, संशयों तथा भेद रूपी मेघ राशियों को मिटाने वाला है, ऐसे श्री महादेव गुरु को मैं प्रणाम करता हूँ।

नवाब्धि व्योम विषयारव्यवर्षे
जया तिथौ यो वसुदैवतायां
तत्याज देहं शिवलोकमाप
तं श्री महा देव गुरुं नमामि ।।१४।।

शब्दार्थ

नव = नव (९), अब्धि = चार (४), व्योम = शून्य (zero), विषया = पांच (५), आरव्य = नाम वाले, वर्षे = वर्ष में, जया तिथौ = जया तिथि (तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी), तत्याज = त्याग किया, देह = शरीर, शिवलोकं = शिवधाम को, आप = प्राप्त हुआ, तं श्री महादेव गुरुं नमामि = ऐसे श्री महादेव गुरु को मैं नमन करता हूँ।

भावार्थ

५०४९ सप्त ऋषि संवत् में अष्टमी के पवित्र दिन पर जिन्होंने अपने देह का त्याग करके शिवलोक को प्राप्त किया, ऐसे श्री महादेव गुरु को मैं प्रणाम करता हूँ।

प्रभातकाले विमलेन्दु पक्षे
शरदृतौ कार्तिक मास मध्ये
सौरे ययौ धाम स्वकं शिवारव्यम्
तं श्री महादेव गुरुं नमामि ।।१५।।

शब्दार्थ

प्रभातकाले = प्रभातकाल, विमले = निर्मल, इन्दुपक्षे = शुक्ल पक्ष के, शरद ऋतु में, कार्तिक मास = कार्तिक मास, मध्ये = बीच में, सौरे = शनिवार के दिन, ययौ = चले गए, धाम = धाम में, स्वकं = अपने शिवारव्यम् = शिवनाम वाले, तं श्री महादेव गुरुं नमामि = ऐसे श्री महादेव गुरु को मैं नमन करता हूँ।

भावार्थ

निर्मल प्रभातकाल के समय पर शरद ऋतु कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष में शनिवार के दिन 3-11-1973 (जो) अपने शिवनाम वाले शिवधाम को चले गए ऐसे श्री महादेव गुरु को मैं प्रणाम करता हूँ।

बोध प्रदीपेन तमो निरस्य
तच्छक्ति पातेन युतो निरञ्जनः
प्रकाशयतं यस्तवराजमेतत्
तेन महादेव गुरु प्रसीदतु ।।१६।।

शब्दार्थ

बोध = ज्ञान के, प्रदीपेन = दीप से, तमं = अंधकार की, निरस्य = दूर करके, तत् = उसके, शक्ति पातेन = अनुग्रह से, युतो = भरा हुआ, निरञ्जन = (निरञ्जननाथ) कोई से रहित, प्रकाशयत् = जगाया, यः = जो, स्तवराजमेतत् = यह स्तोत्र, तेन = उसी से, महादेव = महादेवनामी, गुरु = गुरु देव, प्रसीदतु = प्रसन्न होवे, तं श्री महादेव गुरु नमामि = ऐसे श्री महादेव गुरु को मैं नमन करता हूँ।

भावार्थ

ज्ञान के दीप से अंधकार को दूर करके उसके (गुरु महाराज) के अनुग्रह से युक्त हुआ काई से रहित (आणव, माया, कार्मण्य मलों से रहित) यह स्तोत्र (रूपी चराग) (निरञ्जनाथ) ने जगाया अतः इसी महादेव गुरु देव प्रसन्न होवे ।।१६।।

अवाप्यनुज्ञां गुरु पादुकाभ्यां
प्रभातितोर्न्तहृदि विश्वनाथः
पदानुवादं रचयत् सुबुद्धया
भवेद्धितं सज्जन पुंगवानाम् ।।१७।।

शब्दार्थ

अवाप्त = प्राप्त करके, अनुज्ञां = आज्ञा, गुरु = गुरु की, पादुकाभ्यां = पादकाओं से, प्रभावितो = प्रभावित होकर, अन्तः = अन्दर, हृदि = हृदय से (अन्तःकरण से), विश्वनाथः = विश्वनाथ (ने), पदानुवाद = शब्दार्थ की, रचयत् = रचना की, सुबुद्धया = विशुद्ध बुद्धि से, भवेत् = हो जायेगा, हित = हितकार, सज्जन = सज्जनों के, पुंगवानाम् = उत्तम।

भावार्थ

गुरु पादकाओं से आज्ञा प्राप्त करके निर्मल अन्त:करण से विश्वनाथ ने पवित्र बुद्धि से (सामर्थ्यानुसार) इस स्तोत्र का शब्दार्थ किया (जिससे) उत्तम सज्जनों का हितकार हो जायेगा।।१७।।

यत् पाठानुरतिं आप्य बोधः संजायते परः
भक्तैर्भवे विरक्तिश्च गुरोरनुग्रहो भवते।
स स्तवः पौष मासस्य ह्येकादश्यां गुरोर्दिने
कृतः कृष्णतरे पक्षे निशायां प्रीयतां प्रभुः (गुरु)

शब्दार्थ

यत् = जिस, पाठा = पाठ का, अनुरति = अनुराग, आप्य = प्राप्त करके, बोध: = ज्ञान, संजायते = पैदा होवे, पर: = (उत्कृष्ट) संवित् शक्ति की, भक्तै = भक्ति, भवे = शंकर भगवान पर, विरक्तिश्च = वैराग्य, गुरो: = गुरु का, अनुग्रह = अनुग्रह, भवेत = हो जाए, स = वही, स्तव: = स्तोत्र, पौष-मासस्य = पौष मास के, एकादशां = एकादशी, गुरोर्दिने = गुरुवार के दिन, कृता = रचना की, कृष्णेतरे पक्षे = शुक्ल पक्ष, निशायां = रात्री में, प्रीयतां = प्रसन्न होवे, प्रभु = गुरुदेव।

भावार्थ

जिस पाठ का अनुराग प्राप्त करके संवित् ज्ञान प्राप्त हो जाता है और शंकर भगवान पर भक्ति और वैराग्य प्राप्त होता है, वही स्तोत्र गुरु का अनुग्रह करने वाला बन जाए तथा पौष मास के शुक्ल पक्ष एकादशी (गुरुवार 23-1-1975) रात्रि में इस स्तोत्र की रचना करके गुरु महाराज (हम पर) प्रसन्न होवे।

तव तत्त्वं न जानामि-
कीदृशोसि महेश्वरः
या दृशोसि महादेव-
तादृशाय नमो नमः।।

इति गुरु स्तुति।।

श्री स्वामी विद्याधर के मुख्य शिष्य

महात्मा डा० सूर्य कण्ठ को निम्न शब्द सादर समर्पित :-

पुरा पुरारे पद धूलि धूसरः
अनन्त सिद्धान्त पथान्त गामिनः
समस्त शास्त्रार्णव पार दृश्वनः
विद्याधरस्य प्रियं सूर्यकण्ठं नमामि।।

शब्दार्थ

पुरा = पूर्वकाल में, पुरारे = शंकर भगवान, पद = चरण कमल, धूलि = रज से, धूसरः = धूसरित (स्वच्छ), अनन्त = बहुत सारे, सिद्धान्त = सिद्धांत, पथान्त गामिनः = यथार्थ रहस्य को जानने वाला, समस्त = सारे, शास्त्र्राणव = शास्त्रों के समुद्र पार, दृश्वनः = दूरदर्शी (पारङ्गत), विद्याधरस्य = स्वामी विद्याधर के, प्रियं = प्रिय (तथा मुख्य) शिष्य, सूर्य कण्ठ को, नमामि = नमस्कार करता हूँ।

भावार्थ

पूर्व काल में भगवान् शिव के (परम भक्त) चरण कमल की धूलि से धूसरित (स्वच्छ), अनन्त सिद्धांतों का यथार्थ रहस्य जानने वाले सारे शास्त्रों के पारङ्गत, स्वामी विद्याधर के परम प्रिय शिष्य महात्मा डॉ० सूर्यकण्ठ को मैं प्रणाम करता हूँ।

श्री गुरु आरती

(रचयिता : स्व० श्री दीनानाथ वारिकू)

(१)

भाव पूजा कर सत्गुर चरनन बारम्बार।
अनुग्रह करि अज्ञान हरि मोह घटि करि संहार।
भव सागर दिय तार-जय जय श्री गुरुदेव।।

(२)

वृच चानिवि पुत कर नावि च्यत दर्पण निर्मल।
बुध करि शुध शान्ती दियि धर्मुक असि दियि बल।
देह इन्द्रय शुमरावित करनावि बुड़ दशहार।
अनुग्रह०............

(३)

आत्म लाभच पज़ वथ हावि संकोचस करि नाश।
घट हरि देह अभिमानच नुन हावि स्वात्म प्रकाश।
मूल धरि कर्म वासनायि करि ज्ञान खडगस्यत संहार।।
अनुग्रह०............

(४)

पंच कृत्युक अभ्यास हावि विमर्श बल दियि दान।
संकलपन क्षय कर नावि मन थवनावि सावधान।
रागद्वेषचि रज़ चट नावि च्यन्मय थवि व्यवहार।
अनुग्रह०............

(५)

शक्ति पात जल मल त्रय छलि उपदावि पुज वैराग्य।
बजि दयायि किन्य बड़रावि आत्म उधारुक राग।
पर त पान ह्यूः भासनावि न्यत कर नावि पर उपकार।
अनुग्रह०............

(६)

म्यतहंतायि नाश कर नावि पूर्ण भावच दियि थ्यत्।
शक्ति संकोच गालिथ थवि विकसित नित्योध्यत्।
भाव स्थ्युल भासनावि शिव रूप शिव भासि सर्वाकार।
अनुग्रह०............

(७)

ज्ञान क्रियायि अनुभव करि असि निर्भय हरि भेद।
स्वात्म रूपुक निश्चय दियि देह दृष्टियि करि छेद।
दुरव भासि सुख विष अमृत संसार भासि मोक्षद्वार।
अनुग्रह०............

(८)

खस वसि अच नेरि मंज़ थवि असि स्मरच सान न्यथ।
लय त विक्षेप गालिथ करि बुध थिर निर्मल च्यत।
भेद वृत गालिथ भासनावि संव्यत् सर्वाधार।
अनुग्रह०............

(९)

अनुग्रह किन्य असि थवि न्यथ विमर्शस सन्मुख।
सम भास नावि मान अवमान लाभ हानी सुख दुख।
प्रथ इन्द्रयि किन्य भासनावि प्रथभाव आत्मस्फार।
अनुग्रह०............

(१०)

क्रम सस्तुय असि करनावि च्यत् अमृतकुय स्वाद।
परमानन्द छिव नावि बनि व्युथानस समाध।
भाव मंडुल भासनावि च्यत शक्तीयि हुंद विस्तार।
अनुग्रह०............

(११)

विष्यन हुन्द रस करनावि स्वात्मदेवस अर्पण।
न्यत असंग चेष्टायि किन्य थवनावि संतुष्ट मन।
प्रथ भाव रूप वुछनावि शिव सुय गव साक्षात्कार।
अनुग्रह०............

(१२)

परम साहस बल बनि असि न्यथ पूर्णाहमभाव।
न्यर अपेक्ष करि भुग्यिभाव हरि दियि मुक्तास्वभाव।
पूर्ण भावच तृप्ति दियि थ्यत दियि विश्वाकार।
अनुग्रह०............

(१३)

भाव वृथ पोश लाग्य दीनन गुरु चरणार्बिन्दन।
न्यत्योध्यथ स्वचमत्कार थवतन आनन्द गण।
हे अनुत्तर श्री विद्याधर सत्गुर शिव अवतार।
अनुग्रह करि अज्ञान हरि मोह घटि करि संहार।
भव सागर दियि तार जय जय श्री गुरु देव।।

श्री स्वामी विद्याधर के पाद्य कमलों में लीला रूपी पुष्पाञ्जली

(रचयिता : स्व० श्री महेश्वरनाथ 'संतोष)

श्री गुरो दुख हरतम, सीयत चरणन म्य वरतम
बुम्बरा व्यूर च्यनि आस, चरण कमलण हुन्द दास
प्रेम रस मन म्य बरतम, सअत चरणन०............ (१)

वोलमुत छुस बह माये
जीवन गोम जायये
पोज़ वोपकार करतम्
सअत चरणन०....... (२)

मोह विषयव छुस ब घीर
मुकलावतम दितम ज़ीर
मनसय म्य थर थर छम
सअत चरणन०....... (३)

करहा ब चोन चिन्तन
छुम न ड़ञ्ज रोज़ान मन
छुस उदास छुमम्य यहोय गम
सअत चरणन०....... (४)

काहं वथा बति वुछ हा
सोन वगुन लोल ह्यछहा
पोज़ छा रयय प्योन छु शबनम
सअत चरणन०....... (५)

शैय शैय छम म्य च्यण्य प्रय
लोन म्योन करतन च़ तय
ब्रह्म ज्ञाना म्य परतम
सअत चरणन०....... (६)

ओन छुस गट कासतम
ज्योति रूप च़य म्य बासतम
अणि लूर छुख म्य हरदम
सअत चरणन०....... (७)

धारमच़ छम म्य च्योण्य आश
घटि मन्ज़ हावतम प्रकाश
पज़ि वति कुण म्य अन्तम
सअत चरणन०....... (८)

छुक च विद्याधर जी
बोजतम आरचर त विनती
मन म्य संतोष बरतम
सअत चरणन०....... (९)

लीला

(रचयिता : श्री स्वामी महादेवकाक)

चरणन ब चान्यन सूमरै
चन्द्र शेखरै म्यानि सत गुरै
नाम रूप रस्ति श्याम सुन्दरै
चन्द्र शेखरै म्यानि सत्गुरै (१)

जानिथ म्य जोनुम न क्याम्य गौ
मानिथ म्य मा कोर अनुभव
आसिथ हंस जन छुस खरै
चन्द्र शेख......... (२)

तिछ जान दित्त इथिसयरवरस
युथ प्रावि हंस भाव लभि हरस
गभि चलि यि काल शालन्य थरै
चन्द्र शेख......... (३)

क्याज़ि छुम म्य गोमुत हारि ब्रोर
पत छम म्य कालन्य दोर दोर
छपनस म्य मा कुनि कन्धरै
चन्द्र शेख......... (४)

ओन छुस ब प्योमुत मंज वनस
अथि छम न लूरा डखवनस
थप दिथ म्य वातनावुम घरै
चन्द्र शेख......... (५)

हर हर म्य हरनाव ज़ीव भाव
युथ हरि पनस मञ्जहोर वाव
निर्मल करुम ज़न भास्करै
चन्द्र शेख......... (६)

तस छनह धारणा शम त दम
नियम आसन त कम कम सितम
अष्टाङ्ग यूगक अरसरै
चन्द्र शेख......... (७)

तप जप त शास्त्र परणुय
संध्या, स्नान व्रत धारणुय
युस आसि गुरु सीवा परै
चन्द्र शेख......... (८)

युस चानि चरणुक धारि ध्यान
तथ ध्यानसय कुन लागि प्राण
सुय बनि अजर त अमरै
चन्द्र शेख......... (९)

सदरस छु तरणुक साज़ बाज़
सत गुरु स्पर्या छुय जहाज़
तत्पर च रोज़ निरासरै
चन्द्र शेख......... (१०)

मन नाव प्राणच वाव माल
च्यत के निवेशन सुय सम्भाल
व्रच गाल मंज़ मा लग्य धरै
चन्द्र शेख......... (११)

मंज़ योद वुज़िय संकल्प वाव
शोमरावदम लंगर च त्राव
चंचल स्वभाव त्राव बन स्थिरै
चन्द्र शेख......... (१२)

स्वविचार अंधकार दूर गौ
उछ पव त पकु वन्य त्राव रौ
नम रठ त गम त्राव ध्युव वौरै
चन्द्र शेख......... (१३)

संसार सागर छु धूसरै
तारि पपुन दीक्षत वरै
सुय आदि देव सर्वेश्वरै
चन्द्र शेख......... (१४)

सुय आध्य, मध्य, सुय अन्त छुय
सुय सन्नतनन हुन्द सन्त छुय
सुय शिव शंकर सुय हरै
चन्द्र शेख......... (१५)

सुय सारसय मंज़ छुय कुनय
सुय सारसय निश छुय ब्योनुय
व्यापथ छु सुय चराचरै
चन्द्र शेख......... (१६)

दीवन, हुन्दय, आदि दीव सुय
ब्रह्मा, विष्ण, महादेव सुय
सुय शक्ति नाथ गौरीश्वरै
चन्द्र शेख......... (१७)

ज्ञान दीक्षा

(रचयिता : श्री स्वामी महादेवकाक)

बनि क्या तस यसनह अन्तरगत गोव
हनि हनि मीलिथ छु च्यथ भैरव
धन्यवाद तस यस अजलै प्रजल्यैव (१)

तनि मुचरिथ हनि हनि गोस ननि नोन
खैनह त्रगुण ओसुस वोलमुत ख्योण
घनि विमर्श वन्य आव चैतन्य रव
हनि०............. (२)

प्रकाश विर्मश यति गव रौ
नाद बिन्दह रूप शक्तियामल सुय गौ
स्व विमर्श बलह सततम् तति कन थौ
हनि०............. (३)

'भ' भिभरते सर्वम् स्वात्मस्थित
'र' रवते त्रिजगत स्वातर्घत
'व' वमते विश्वम् स्व भिस्तौ
हनि०............ (४)

पान भगवान मानुन पननुय पान
पननुय पान ज़ानुन मोक्षस्थान
हत बज़ह वत रट्य रट्य नतह क्या गव
हनि०............ (५)

जड़ चेतन तन मन धन अर्पण
कर भगवानस बन आनन्द घन
स्वात्मस्थित रोज हंसस कन थव
हनि०............ (६)

भूग व्रत त्राव भूगस छु क्षण क्षण नाश
भूग आशा छि बनान ज़्यन मरण पाश
भूगियस छुय गरि गरि लय त उदव
हनि०............ (७)

योग किस आसनस व्यठ यिम न्यथ व्यह्यन
प्रकटावन पानस योगुक चिह्न
योग द्रुमसयि नेरयख आनन्द छव
हनि०............ (८)

परमार्थच वत्ति न्येर सथ वति फेर
यति आरव तोत छुय वातुन म कर च़्येर
मति मीलिथ न्यथ रोज़ च्यथ वति थव
हनि०............ (९)

आकाशिच अछ़ रछ वछह श्राणस
तन नाविथ खचह पननिस थानस
भगवानस पननिस गत कर तिमव
हनि०............. (१०)

सिर्य चन्द्रम नित्रौ शक्ति सागर
मथनिथ द्राव अमृत रस आकर
बलवीरव थलि थलि गलि गलि चैव
हनि०............. (११)

यथ संसार सरस्य सर पम्पोश
रंग रंग फ़लिमित छि बरजस्त बरजोश
व्यूर अथ तुल पूरि पूर वीर भोम्बरौ
हनि०............. (१२)

होश पोश नूल रोषह चाव पोश वारे
गोश गोश फ्यूर सूत्य हय्थ वन हारे
नीर पोशन व्यूर तुलान पांचव मोखव
हनि०............. (१३)

सत्गोरह मुख आमनाइ अवलम्बन
दारिथ कर घरि घरि परिशीलन
सत चित् आनन्द स्वभाव अनुभव
हनि०............. (१४)

जीवन ज्ञान

(रचयिता : श्री स्वामी महादेवकाक)

चह ज़ीव मअर मअर ज़्यवान रुदुख
रिवान रूदुख रिवान रूदुख
गतागतस मंज़ सदा प्योमुत छुख
जुदा गोमुत छुख शिवस शरण गछ़।
शिवाय नमः ॐ शिवाय नमः ॐ शिवाय नम ॐ नमः शिवाय (१)

असंख्य जन्मन चजिय न गांगल
च पान मालिक मुहन ह्योतुख तल
स्यठा खोतुय मल बन्योख च़ह दल दल
बनख च निर्मल शिवस शरण गछ
शिवाय...... (२)

अमीर आसिथ क़रथ गदाई
पनन्य च़्य पानय करथ तबाही
ज़मीर अमिचि दिय्यी गवाही
लबख रिहाई शिवस शरण गछ
शिवाय...... (३)

ज्य जामि उलफत च प्राव मस्ती
रफाहि हर· कस बनाव हसती
चलीय दरद्रि त तंगदस्ती
लगिय च बसती शिवस शरण गच्छ
शिवाय...... (४)

जरादि दुख च़्य मरुण त ज्योन च़्य
गहे खसुन च्य गहे वसुन च्य
थद्यव पहाड़ौ डुलय गछ्न च्य
चलीय नचुन च्य शिवस शरण गछ
शिवाय...... (५)

च़ह वारि चक्रस वुरण आमुत
च़ह क्रीड़ जालस अन्दर फस्योमुत
गहे च गर्भस अन्दर बस्योमुत
स्यठा त्रस्योमुत शिवस शरण गच्छ
शिवाय...... (६)

च्ह चोथ योत यिथ शराबि गफलत
बदामि उलफत लोगुख च क्षयथ च्यथ
असंग शस्त्र चटिथ यि उलफथ
च फेर वन्य पोत शिवस शरण गच्छ
शिवाय...... (७)

चयनो सोरुथ ज़ांह शिवह सुन्दय नाव
चयनो कोरुथ जांह शिवह सुन्दय भाव
मोहन त लोभन फिरय च़्यह डुबह नाव
चह देह भ्रम त्राव शिवस शरण गच्छ
शिवाय...... (८)

इह जन्म दारिथ च़्य क्या स प्रोवुथ
यि धन च़्य ओसु ति चूरि नयोवुथ
च़्य पापकुय बोर विचिरिथ थोवुथ
च्य रावरोवुथ शिवस शरण गच्छ
शिवाय...... (९)

न छुय पिता काहं न काहं च्य माता
न काहंच्य भगिनी न कांह च्य भ्राता
गर्ज़ छि प्रेमच कथा न बाथा
दिनय न साथा शिवस शरण गच्छ
शिवाय नमः........ (१०)

महा बली क्रोध, मोह त अभिमान
कोरुख तिमव चियि स्यठा परेशान
गहे च इन्सान गहे च हैवान
च़ कर पनन्य जान शिवस शरण गच्छ
शिवाय नमः........ (११)

च़ह पान लागुथ छम्बन त छारण
दिच्य न शन्ति चितकय करारण
च्य काल पतह पतह दोहय छु लारान
दोहय च्य माराण शिवस शरण गच्छ
शिवाय नमः......... (१२)

शरण गछुन छुनह परुण शलोका
जपुन यि मन्त्र बनिथ त मूका
शरण गछुन छुय अजब अनोखा
बनुन अशोका शिवस शरण गछ
शिवाय नमः..... (१३)

शरण गछुन गौ जिन्दय मरुण जन
पतंगवत दीप गत करुण जन
शरण गछुन भवसरस तरुण जन
परुण यि सोहम शिवस शरण गछ
शिवाय नमः........ (१४)

शरण गछुन गौ वुछुन चोपारी
शशाकधारी सुह सर्पहारी
चटन्य मोहकि अर्गल त तारी
जगत विहारी शिवस शरण गछ
शिवाय नमः........ (१५)

जिन्दय मरुण छुय हयाति अबदी
जिन्दय मरुण छुय मोक्ष लब्धी
जिन्दय मरुण गयि चितच़ अक्षुब्धी
बनुन स्व .शब्दी शिवस शरण गछ
शिवाय नमः........ (१६)

जि जामि अमृत च़्य जाम चावी
शिवादि धर्यन्त कुनुय बनावी
च्य पान पानस सीत्य मिलावी
स्वरूप हावी शिवस शरण गछ
शिवाय नमः........ (१७)

सु दीवतोन देव प्रकट महेश्वर
प्रकाश सिंधु विमर्श सागर
धरादि शंकर गुपित चराचर
छुपिथ दिमस सर शिवस शरण गछ
शिवाय नमः ॐ शिवाय नम ॐ
शिवाय नमः ॐ नमः शिवाय

गुरु आराधना

(रचनाकार : श्री प्रेमनाथ रैना)

पनुनुय स्फार छुय पनुन वोलसनो
श्री सत्गुरु म्य दर्शुन हाव
अमृत आनन्दके आघरो
श्री सत्गुरु म्य दर्शुन हाव।।१।।

अन्त बहिः छुख च ऐश्वर्यमान
प्रकाशघन छुख च शोभायमान
त्रहन-त-शन त्वत्तन हुन्द आधार बनिथ न्यर्मलो
श्री सत्गुरु...... (२)

संवित् रूप किञ च़ सोरिसय व्याप्त
प्रकाश विमर्श किञ च भक्तियि प्राप्त
कर त म्य दया दृष्टि युथ केंह रोजिन परो
श्री सत्गुरु...... (३)

अनुग्रह कर त म्य दर्शन हावतम
अमृत धामुक अनुभव भावतम
युथ न्यथ चरणन हृदयस मंज़ कर हो हो
श्री सत्गुरु...... (४)

यथ नाना जगतस मंज़ च कति छुख
वञि छुस दिवान वतन च कथ वति छुख
चेर गव वोञ अथ रटिथ तारुम भवसरो
श्री सत्गुरु...... (५)

अजलय ओसुस बु च़ेय शरण
तवय सीविम दोहय चाञ चरण
कृपा करतम युथ चलिहेम प्रोण मलो
श्री सत्गुरु...... (६)

पान भगवान छुख सोरिय देवता रूप
सारिनिय तीर्थन हुन्द समिष्ट रूप
जाय दिम पनुञन चरणन तल निष्फलो
श्री सत्गुरु...... (७)

सूर्य चन्द्रम तारागण मंज़ च्य ज़ोतान
शीन बालन त पोश-मर्गन मंज़ च खेलान
नाग-रादन त आर-पलन हन्दि डुल-डुलो
श्री सत्गुरु...... (८)

सोम्बुल, टेंकटञन त यम्बरज़लन मंज़
कोसम कमलन त गोलाबन मंज़
हर रंग हरद्वार फलिमत्य म्य कम गुलो
श्री सत्गुरु...... (९)

सह शाल ज़ीव-जाचन हुन्द जुव च छुख
बुलबुलन पोशनूलन कुकिलन हुन्द बालेबोश च छुख
सारिकुय ज़ुव बनिथ च़ छुख अन्दर न्यबरो
श्री सत्गुरु...... (१०)

चाञन कल्पवृक्ष चरणन हन्ज़ शीतल छाय
न्यथ ब बरहय तथ्य तल च्य माय
द्यव बति प्रावहा भक्ति-बलो
श्री सत्गुरु...... (११)

दुर्लभ छु ज़ानुन यि दय छु क्याह
मोलूम छुन कांसि क्याह पय लब्या जांह
जानि सुय युस बनि गुरु-चरणन हुन्द पातरो
श्री सत्गुरु...... (१२)

जिगरस मंज़ ब ललनावथ
वोञ तिनो कांसि हावथ
ख्याविथ खिर त खण्ड करय चामरो
श्री सत्गुरु...... (१३)

प्रेमस रुज्यतन न्यथ गुरु दीव सहायतस
येम्य सोरुय छु पुशरोवमुत तस
अद द्यव गलिहा यमि संसारुक आवलनो
श्री सत्गुरु म्य दर्शुन हाव (१४)

आराधना

(रचनाकार : श्रीमती मोहनी ककरु)

भव बन्धन हरवनि हरय
आराधना विज़ विज़ करय
दूरे दिहमना पूरय रय
आराधना विज़ विज़ करय ।।१।।

मन्दछान मन्दछान छुस इवान
पापन बह पनन्यनसाम ह्यवान
आरतिस म्य बोज़तम आर्चरय
आराधना विज............ ।।२।।

रंग रंग पूजान च्य ज्ञानवान
कम्य रंग पूज़थ बह गैरजान
शरणागत ज्ञाण सागरय
आराधना विज............ ।।३।।

निर्बल बह शक्ति हीन छुस
दीनन मंज़ बोड़ दीन छुस
लछनावया! कर क्यत अरसरय
आराधना विज............ ।।४।।

यज्ञ तप जप विचार ज्ञान
अम्य मंज़ मा छम मय कुनिच जान
अनजान पोश ह्युव इन मरय
आराधना विज............ ।।५।।

शिवरूप सहायक नाव चोन
मनुष्य रूप गुण प्रेम भाव चोन
गुरह रूप तार दिम भव सरय
आराधना विज............ ।।६।।

प्रव च्यान तीज़च यस प्यवान
देह छुस मशान मन छुस शमान
छिस मशान शुर बाच ठोठ घरय
आराधना विज............ ।।७।।

दिम म्य तुत चय सम्यक ज्ञान
यम्य सीत बनह म्य ब्रह्म जान
चल्यम इत गछ बय ज़्यत मरय
आराधना विज............ ।।८।।

थप करथ· स्वारुम म्य सत धाम
तथ जाय यथ नाव छु अनाम
करतम दया वन्य सथ गुरयै ।।९।।

आराधना विज़ विज़ करय
दूरे दिहम ना पूरय रय।।

जलस्येवोर्मयो वह्नेर्ज्वालाभङ्गयः प्रभा रवेः।
ममैव भैरवस्यैता विश्वभङ्गयो विनिर्गताः।।

Just as waves are not separate from water, just like flames are not separate from fire, just like rays are not separate from Sun, in the same way all currents and flows of universe have come into the manifestation from consciousness of Bairava.

इति शिवम्!

लसद् भक्ति रसावेश हीनाहंकार विभ्रमः।
स्थितेऽपि गुणसंमर्दे गुणातीतः समो यतिः।।

अर्थ :- भक्ति-रस के आवेश से शोभित होने के फलस्वरूप जिसका अहंकार रूप भ्रम दूर हो गया हो वह (साधक) गुणों के संघर्ष में रहते हुए भी गुणातीत है। समभाव में स्थित है। संन्यासी-जितेंद्रिय है।

- श्री अभिनव गुप्त

angad business centre
Jewel Chowk, Jammu
Ph. : 0191-544483